>

Title: Further discussion on resolution regarding special status to the state of Bihar moved by Dr. Bhola Singh on the 21st August, 2010.

MR. CHAIRMAN: Now the House will take up Item No.20 – Dr. Bhola Singh to continue.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति महोदय, लगभग एक वर्ष पहले इस सदन में बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिले, यह गैर सरकारी संकल्प इस सदन में पुरस्थापित हुआ था और एक वर्ष के अन्तराल में समय समय पर यह उपस्थित भी हुआ लेकिन सदन में यह विचार विमर्श के लिए उपस्थित नहीं हो पाया। आज यह सौभाग्य आपकी मौजूदगी में इस सदन को और बिहार को प्राप्त हो रहा है। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिले, यह कोई राजनीति का विषय नहीं है। यह कोई राजनैतिक पार्टी का भी विषय नहीं है। यह बिहार के विकास और बिहार के उदय के साथ जुड़ा हुआ विषय है और अंत तक यह राष्ट्रीय विकास के साथ भी जुड़ा हुआ है।

मार्श ने एक स्थान पर कहा है कि हमारे जीवन में और राष्ट्रीय जीवन में भी आर्थिक मामले राष्ट्र के प्रवाह की धारा बदलते हैं और यह आर्थिक मामला विकास के साथ जुड़ा हुआ है। जब मैं बिहार को स्पेशल राज्य का दर्जा देने की मांग करता हूं तो यह कोई मेरी याचना नहीं है। यह कोई मेरी प्रार्थना नहीं है, भिक्षाटन नहीं है, बिहार का गौरवशाली इतिहास, गौरव, यश, कृति है लेकिन आज उपजाऊ जमीन होते हुए भी जमीन के नीचे पानी की अंतरसलिला रहते हुए भी, सात नदियों के रहते हुए मेहनतकश अवाम के परिश्रम के रहते हुए भी बिहार इतिहास में गौरव के आसन से नीचे उतर गया। इसका कारण बिहार स्वयं नहीं है बल्कि देश की राजनीतिक अवस्थाएं, घटनाएं हैं जिन्होंने बिहार को इस रूप में उपस्थापित किया। मैं लंबी बात न कहकर आपके सामने कुछ तथ्यों को रखना चाहता हूं, वह तथ्य है कि बिहार का यह शताब्दी वर्ष है और बिहार 100 वर्ष में अपने नाम, अस्मिता के साथ प्रवेश कर गया है। बिहार राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है, सर्वधर्म समभाव का प्रतीक है, राष्ट्रीय प्रतीक का चिह्न है। बिहार की मिट्टी ने मोहनदास करमचंद गांधी जी को महात्मा के आसन पर बिठाया। इसकी मिट्टी में लोक नायक जय प्रकाश जी ने जन्म लिया, उन्होंने मदांध सत्ता को उसकी औकात को जमीन पर उतारने का काम किया। बिहार ने संपूर्ण राष्ट्र को एक दिशानिर्देशन दिया है। बिहार ने इतिहास में छठी शताब्दी ई.पू. से लेकर 323 एडी के बीच बिहार ने संपूर्ण देश की भौगोलिक सीमा, हिंदुकुश पर्वत की सीमाएं बांधी। बिहार ने सबसे पहले इस देश में सेल्युकस, सिकंदर के सेनापति को हराया। बिहार ने कौटिल्य के माध्यम से आइडियल स्टेट निर्माण के सिलसिले में तमाम आचार संहिताओं को जन्म दिया। बिहार संपूर्ण विश्व में डेमोक्रेसी की मां है। बिहार सर्वधर्म की पालना है, संपूर्ण विचारधाराओं का समन्वय है और आज बिहार सौफरेन सदन में अपने स्पेशल दर्जे के लिए आने के लिए विवश हुआ है।

महोदय, कुछ दिन पहले जुलाई में 1,25,00,000 लोगों के हस्ताक्षर को लेकर एनडीए के संयोजक श्री शरद यादव जी ने महामहिम राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री के सामने जनता के आंसुओं को, उनकी अपेक्षाओं, आकांक्षाओं और समस्याओं को रखा और माननीय प्रधानमंत्री जी ने उनकी बातों को सुना। हम इस बात को आपके सामने रखना चाहते हैं कि जब वर्ष 2000 में बिहार का बंटवारा हुआ, झारखंड हमारे अंग से काटा गया। पहले उड़ीसा हमारे अंग से काटा गया, हम बंगाल से अलग हुए, हमारा शरीर लहुलुहान हुआ। हम दधीची की हड्डी बन गए। जब झारखंड हमसे अलग हुआ, इसे आप दुर्भाग्य कहिए कि झारखंड को 47 प्रतिशत भूभाग प्राप्त हुआ लेकिन जनसंख्या का दसवां हिस्सा प्राप्त हुआ जबकि बिहार का क्षेत्रफल 54 प्रतिशत रहा। बिहार से वह हिस्सा कट गया जहां कोयला था। हिंदुस्तान का 47 प्रतिशत भाग का कोयला झारखंड, बिहार में था। यहां तांबा, अभ्रक, लोहा, यूरेनियम भी था। बिहार के पास जो हिस्से बचे, कोसी, गंगा, सतमाला नदियों, गंडक, बूढ़ी गंडक से तार-तार हुआ। और प्रत्येक वर्ष बिहार सैकड़ों करोड़ की क्षति से आवेष्टित हुआ और दक्षिण बिहार क्रोनिक सुखाड़ से पीड़ित हो गया। बिहार की सारी नदियां नेपाल से आती हैं। हम इस सदन में कहना चाहते हैं कि बिहार की आज जो दुर्दशा हुई है, इसलिए बिहार आज केन्द्र सरकार की कालोनी के रूप में उपस्थित हुआ, हम उसकी अवस्था को लेकर आपके माध्यम से सदन में उपस्थित हुए हैं।

सभापति महोदय, 2000 ईस्वी में जब बिहार का बंटवारा हुआ तो बिहार विधान सभा में एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पास हुआ, संकल्प पास हुआ कि बिहार के बंटवारे से इस राज्य पर जो विपरीत प्रभाव पड़ा है,, जो कुप्रभाव पड़ा है, उस हानि को पूरा करने के लिए बिहार को एक लाख चालीस हजार करोड़ रुपये प्राप्त हों। सभी पार्टियों ने, सभी पार्टियों के माननीय सदस्यों ने बिहार विधान सभा में इसे पास किया। 2006 में पुनः उसी बिहार विधान सभा ने एक सर्वसम्मत संकल्प पास किया कि बिहार को स्पेशल राज्य का दर्जा दिया जाए और इस संकल्प को लेकर बिहार की तमाम पार्टियों के नेताओं ने तत्कालीन सरकार के साथ भेंट की और मेमोरैंडम दिया। उन्हें आश्वासन प्राप्त हुए, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई। तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति, श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बिहार विधान सभा गये और उन्होंने अपना उद्बोधन दिया। उन्होंने उस उद्बोधन में कहा कि मिशन 2020 में बिहार कैसे विकास करेगा और उस विकास के लिए बिहार को क्या-क्या करना होगा। महामहिम राष्ट्रपति जी ने एक अनुदेश दिया, उन्होंने एक प्रबोधन किया और बिहार के मुख्य मंत्री, श्री नीतीश कुमार ने महामहिम राष्ट्रपति जी से उनकी उपस्थिति में. जो उन्होंने संकल्प कराया, उसका समर्थन करते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि राष्ट्रपति जी हम आपके दिशा-निर्देशन का पालन करेंगे और हम बिहार को 2015 तक विकसित राज्य बनाने का संकल्प लेते हैं। राष्ट्रपति जी संवैधानिक प्रधान होते हैं और राष्ट्रपति जी का निर्देश एक संवैधानिक उच्चतम इकाई का निर्देश है और बिहार को स्पेशल राज्य का दर्जा देना हमारी एक संवैधानिक बाध्यता हो गई है। जो हम आपके सामने रखना चाहते हैं। हम इसके साथ ही यह भी कहना चाहते हैं कि बिहार स्पेशल राज्य का दर्जा पाने के सारे मापदंड पूरे करता है। एक स्पेशल राज्य के लिए किन-किन चीजों की आवश्यकता है, उसमें प्रमुख आवश्यकता यह है कि उस राज्य की सीमाएं दूसरे देश से जुड़ी हुई हों और बिहार की सीमाएं नेपाल और बंगलादेश से जुड़ी हुई हैं। लगभग एक हजार किलोमीटर इसकी सीमाएं इनसे मिलती हैं।

दूसरी शर्त यह है कि राज्य में पहाड़, पथरीली जमीन और जंगल हों, ये सब उत्तर और दक्षिण बिहार में इस राज्य को प्राप्त हैं। तीसरे मौलिक संरचना का अभाव हो, वहां यह भी है। चौथा विकास के लिए बाजार की आवश्यकता है और औद्योगिक क्रांति की आवश्यकता है। औद्योगिक क्रांति बिहार में नहीं हुई। मैं समझता हूं कि ये सारी चीजें बिहार को एक स्पेशल राज्य के रूप में उपस्थापित करने के लिए पर्याप्त हैं। इसलिए हम आपके सामने इस बात को रखना चाहते हैं। एक एक्सपर्ट ने कहा है कि जब तक भारत के पूर्वी हिस्से का विकास नहीं होगा तब तक भारत आर्थिक रूप से महाशक्ति नहीं बन सकता है। पूर्व में जितने भी राज्य हैं, बिहार को छोड़ कर सभी को आपने स्पेशल राज्य का दर्जा दिया है। बिहार उसमें मुख्य है जिसको आपने छोड़ दिया है। हम आपके माध्यम से बिहार को स्पेशल राज्य का दर्जा देने के लिए आग्रह करना चाहते हैं। यह राजनीति का विषय नहीं है। संपूर्ण देश को विकसित और शक्तिशाली बनाने के लिए बिहार का पिछड़ रहना दुर्भाग्यपूर्ण होगा।

सभापति जी, हम आपके सामने एक तथ्य और रखना चाहते हैं कि हमने सरकार से समय-समय पर क्या-क्या नहीं कहा है। हमने कहा कि झारखण्ड बनने के बाद

से बिहार को आश्वासन दिया गया था कि बिहार की क्षति की भरपाई करेंगे। बिहार विधानसभा ने उस संकल्प को व्यक्त किया। सन् 1989 में उस समय के प्रधानमंत्री जी ने गांधी मैदान में कहा था कि प्रत्येक वर्ष 5100 करोड़ रूपये बिहार को पैकेज के रूप में देते रहेंगे। वह बिहार को प्राप्त नहीं हुआ। बिहार में औद्योगिक क्रांति के लिए, विद्युत उत्पादन के लिए जो कोल-लिंकेज की आवश्यकता है, उसके लिए 90 हजार करोड़ रूपये की आवश्यकता है। केंद्र सरकार के यहां विद्युत उत्पादन के लिए हमारी योजनाएं पड़ी हुई हैं। एक बार कोल लिंकेज दिया गया, लेकिन उससे बिजली पैदा नहीं हो सकती थी, लोहा गलाया जा सकता था।

सभापति महोदय, हम आपके सामने कहना चाहते हैं कि जिस समय अंग्रेज थे, उस समय बिहार में 42 चीनी मिलें थी, आज मुश्किल से आठ चीनी मिले हैं। बिहार सरकार ने एथनाल की अनुज्ञप्ति के लिए केंद्र सरकार के सामने प्रस्ताव रखा था। इसी सदन में कृषि मंत्री शरद पवार जी ने आश्वासन दिया था कि हम दो-तीन महीने के अंदर बिहार को चीनी मिल खोलने के लिए, अगर बिहार एथनाल चाहता है तो हम उस एथनाल के लिए अनुज्ञप्ति देंगे। सभापति जी, इस सम्मानित सदन में माननीय मंत्री जी घोषणा करें और उसका कार्यान्वयन न हो, यह दुर्भाग्य की बात है।

सभापति जी, राष्ट्रीय विकास परिषद् में हमारे मुख्यमंत्री जी ने, माननीय प्रधानमंत्री जी के सामने कहा कि बिहार के नवादा जिले के रजौली में न्युक्लियर पॉवर प्लॉन्ट लगाए जाएं। उसके संबंध में तमाम तकनीकी पदाधिकारी भी बिहार गए। बिहार सरकार ने यह भी आश्वस्त किया कि न्युक्लियर पॉवर प्लॉन्ट के लिए पानी की जो भी आवश्यकता होगी, हम उसको पूरा करेंगे। धनंजय नदी में हम उस चीज़ को पूरा करेंगे। लेकन वह पूरा नहीं हुआ है, उस पर कार्यवाई नहीं हुई है, वह लटका पड़ा हुआ है।

सभापति जी, दूसरे राज्यों को अपने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने की छूट है, लेकिन बिहार को यह छूट नहीं है। हम अपने गंगा जल का भी उपयोग नहीं कर सकते हैं। पिछले दिनों कहलगांव में गंगाजल का उपयोग करने पर, हमें रोक लगा दी गई।

सभापति जी, स्पेशल राज्य का विषय केवल आर्थिक विषय ही नहीं है। फरक्का में गंगा सूखती जा रही है। आप जानते हैं कि हमारे यहां औद्योगिक क्रंति नहीं हुई है। हमारे यहां गंगा जल का जो बंटवारा हुआ, वह बिहार से बिना पूछे और बिना राय लिए हुआ। सोन नदी के पानी के बंटवारे के सिलसिले में भी बिहार की कोई भागीदारी नही रही। महोदय, आज बिहार की सारी नदियों के जल के बंटवारे के बारे में बिहार केंद्र सरकार से आग्रह करता है। गंगा जल के बंटवारे के बारे में, सोन नदी के जल के बंटवारे के बारे में केंद्र पुनः बिहार सरकार के साथ बातचीत करे, विचार-विमर्श करे, यह हम आपके माध्यम से केंद्र सरकार से कहना चाहते हैं। हम आपके माध्यम से केंद्र सरकार से यह भी कहना चाहते हैं कि हिमालय से निकलने वाली जो नदियां हैं, हमने शुरू में ही कहा है कि बिहार का प्राण नेपाल में बसा हुआ है। कोशी नदी शोक की नदी कहलाती है, इस कोशी नदी के कारण प्रत्येक वर्ष बिहार अधोगति में है। कोशी नदी और अन्य दूसरी नदियां जिनका स्रोत नेपाल है, नेपाल में डैम बनाकर उन नदियों पर नियंत्रण रखने की जो जिम्मेदारी बिहार सरकार की हो सकती है, वह नहीं है। बिहार ने बार-बार केंद्र सरकार से इस मामले में आग्रह किया कि केंद्र इस दिशा में कार्यवाही करे, लेकिन आज तक केंद्र की सरकार ने नेपाल की सरकार के साथ बातचीत करके उसने इस दिशा में कोई कार्यवाही करने का कदम नहीं उठाया है।

महोदय, हम किसी स्पेशल पैकेज की बात नहीं कर रहे हैं। हम नहीं चाहते हैं कि हमें स्पेशल पैकेज दिया जाये, हमें कुछ रूपयों की घूंट पिलायी जाये, हम ऐसा नहीं चाहते हैं। हम चाहते हैं कि स्पेशल राज्य का दर्जा हमें प्राप्त हो ताकि हमें एक्साइज ड्यूटी में छूट मिले, बिहार में बड़े पैमाने पर पूंजी निवेश हो, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर पूंजी निवेश बिहार में हो। हम इस बात को कहना चाहते हैं कि बिहार के छात्र प्रतिभाशाली हैं, बिहार के युवक प्रतिभाशाली हैं, बिहार के किसान प्रतिभाशाली हैं और कृषि उत्पादन में बिहार का भविष्य उज्जवल है। बिहार का वर्तमान कृषि क्रान्ति है। हमारे पास औद्योगिक क्रान्ति की कोई जगह नहीं है, हमारे पास कृषि क्रान्ति, कृषि आधारित उद्योग-धंधों की आवश्यकता है। इसके लिए हम कहना चाहते हैं कि पिछले दिनों विश्व बैंक ने भी सहरसा के इलाके में, सुपौल के इलाके में, पिछले तीन वर्ष पहले जो विनाशक बाढ़ आयी थी, उससे जो तीस लाख लोग विस्थापित हुए, उन्हें बसाने का सवाल, उन्हें पुनःवार्सित करने का जो सवाल था, उस सवाल पर विश्व बैंक ने हमें सहयोग करने का आश्वासन दिया है। प्रधानमंत्री जी वहां गये हुए थे और यूपीए की चेयरपर्सन सोनिया गांधी जी भी गयी हुई थीं। दोनों ने उस बाढ़ के समय बिहार को आश्वासन दिया था कि बाढ़ या त्रासदी केवल बिहार की नहीं है, यह राष्ट्रीय त्रासदी है, यह राष्ट्रीय विपदा है। उन्होंने ऐसा कहा था, लेकिन ऐसा कहने के बाद भी बिहार को उनसे जो अपेक्षा हो सकती थी, वह बिहार को प्राप्त नहीं हुआ।

महोदय, बंगाल हुंकार करता है तो एक मिनट में भारत सरकार बीस हजार करोड़ रूपया दे देती है। उत्तर प्रदेश का बुन्देलखंड हुंकार करता है, कांग्रेस के प्रधान सचिव श्री राहुल गांधी जब वहां जाते हैं तो वहां सहायता दी जाती है। मैं यह नहीं कहता हूं कि ऐसा न हो। आध्र प्रदेश में विपदा आती है तो हजारों करोड़ रूपये आप देते हैं, दूसरे राज्यों में विपदा आती है तो हजारों करोड़ रूपये आप देते हैं। हम यह नहीं कहते हैं कि उन्हें न दिया जाये। हम यह कहते हैं कि उन्हें देते हैं तो दीजिये, और दीजिये, लेकिन बिहार के मामले में आपकी घिग्घी क्यों बंध जाती है, बिहार के मामले में आपके हाथ क्यों बंध जाते हैं, बिहार के मामले में आपके पैर क्यों थरथराने लगते हैं, क्या बिहार आपके जिस्म का हिस्सा नहीं है?

सभापति महोदय, मैं एक कहानी के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट करना चाहता हूँ।

"ढोलक बज रहे थे, तबला बज रहा था, सभा हो रही थी और उसी बीच में एक बकरा आकर बैठ गया। लोगों ने बकरे से पूछा - 'बकरा, तू तबले की आवाज़ को पहचानता है, समझता है? कहा - नहीं समझता हूँ। तू हारमोनियम की आवाज़ को समझता है? कहा - नहीं समझता हूँ। तू ढोलक की आवाज़ को समझता है? कहा - नहीं समझता हूँ। तो तू यहाँ क्यों है?' बकरा ने कहा - मैं यहाँ इसलिए हूँ कि वह जो तबला है, वह जो ढोलक है, उसका जो चमड़ा है, वह हमारे जिस्म का चमड़ा है। उस पर जब चोट पड़ती है तो वह चोट हमको लगती है। हमको दर्द होता है।"

इसलिए बिहार भारत का जिस्म है, बिहार भारत की आत्मा है, बिहार भारत के शरीर का हिस्सा है और अगर बिहार को चोट लगती है, भारत को चोट लगती है तो बिहार तिलमिलाता है।

सभापति महोदय, हम आपसे कहना चाहते हैं कि आपको याद होगा, 1975 से 1977 तक पूरे देश में जो आंदोलन हुए, बिहार उसकी अगुवाई कर रहा था। उस समय श्री लोकनायक जयप्रकाश नारायण, श्रीमती इंदिरा गांधी से उनके निवास स्थान पर मिलने के लिए गए हुए थे। उन्होंने जाकर श्रीमती गांधी से कहा कि मैं हिन्दुस्तान की पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी से मिलने नहीं आया हूँ, मैं अपनी बेटी इन्दु से मिलने आया हूँ। इंदिरा जी फफक-फफक कर रोने लगीं। जयप्रकाश जी रोने लगे। यह है बिहार का केन्द्र के साथ रिश्ता, यह है हमारी राजनीति का रिश्ता। हम राजनीति में शुचिता के प्रहरी हैं, हम राजनीति में शुचिता के पथिक हैं। 2005 में बिहार की वार्षिक कार्य योजना 4200 करोड़ रुपये की थी। आज बिहार की कार्य योजना लगभग 24000 करोड़ रुपये की है। हमने पाँच वर्ष के अंदर बिहार में बदलाव किया है। हमने अपने संकल्प को दोहराया है। हमने तकनीकी फील्ड में, शिक्षा के क्षेत्र में, कृषि के क्षेत्र में, पाँच वर्षों के अंदर हमने बिहार में

विकास दर को 11 से 13 प्रतिशत तक पहुँचाया है। हम गुजरात के बहुत करीब हैं। इसलिए हमने एक संकल्प दिया है और हमारी बहुत सारी योजनाओं का केन्द्र ने अनुकरण किया है, केन्द्र ने उनको अपनाया है। हम *हारबिंगरों* की सोसाइटी बन रहे हैं, हम अपने इतिहास के गौरवशाली पहलू को उतार रहे हैं, उसे उठा रहे हैं। आज जब बिहारी मुम्बई जाता है तो वहाँ के लोग कहते हैं कि यह जो डेंगू फैला है, सब बिहार के कारण फैला है। बिहार के लाखों लोग दिल्ली में हैं तो दिल्ली की चीफ मिनिस्टर कहती हैं कि दिल्ली की जो गंदगी है, वह बिहार के चलते है, उत्तर प्रदेश के चलते है। जिस तरह से हमने देखा कि लंदन और अमेरिका जो पश्चिमी मॉडल के देश हैं, वहाँ साउथ ईस्ट एशिया के जो लोग हैं, अफ्रीका के लोग हैं, आज उन्हें अपने संकट को दूर करने के लिए, इन लोगों को निकालने के लिए कदम उठा रहे हैं, उनकी आवाज़ उठ रही है। और आज इस देश में बिहार को उसके राज्य मुम्बई से निकाला जाए, महाराष्ट्र से निकाला जाए, कर्नाटक से निकाला जाए, पंजाब और हरियाणा से निकाला जाए कि बिहार गंदगी का रूप है, बिहार लज्जा का रूप है, बिहार सांस्कृतिक पतन का रूप है, यह जो बीमारू राज्य बिहार था, हमने इस राज्य को एक सबल राज्य के रूप में उपस्थापित करने के लिए कदम उठाया है। हमारी विकास दर बहुत आगे बढ़ी है और हमारे यहां बहुत सारे पूँजी निवेश होने लगे हैं। हमने कानून व्यवस्था को ठीक किया है। इसलिए हम आपके माध्यम से एक आग्रह करना चाहते हैं। मैंने प्रारंभ में कहा कि यह कोई राजनीति का विषय नहीं है, यह किसी पार्टी का सवाल नहीं है, यह अंततः देश के विकास के साथ जुड़ा हुआ सवाल है।

सभापति जी, अंत में एक बात कहकर मैं अपनी बात को समाप्त करना चाहता हूँ।

16.00 hrs.

बिहार शांति, स्वतंत्रता, विकास का प्रतीक है और सर्व और बढ़ता हुआ क़दम है।

महोदय, एक जंगल में आग लगी हुई थी। चिड़िया उड़कर जाती थी और समुद्र से पानी को चोंच में उठा कर उस आग को बुझाना चाहती थी। वह उड़ती थी, जाती थी, चोंच में पानी लाती थी और उसे आग पर डालती थी। उस समुद्र में हाथी स्नान कर रहा था। हाथी ने कहा कि चिड़िया क्या तेरी चोंच में इतना पानी आ सकता है कि जिस आग को तू बुझाना चाहती है, उसे बुझा सके। चिड़िया ने कहा - हाथी, मुझे मालूम है कि मेरी चोंच में कितना पानी है। मैं जानती हूं कि मेरी चोंच में जितना पानी है, उस पानी से यह आग नहीं बुझेगी, लेकिन मैं इतिहास में लिखवाना चाहती हूं कि जब आग लगी हुई थी, तो मेरा नाम आग बुझाने वालों में होगा न कि आग लगाने वालों में। हाथियों ने जब यह सुना, तो सारे हाथी सूंड में पानी ले कर दौड़े और उस आग को बुझाने लगे।

महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि बिहार विकास के माध्यम से शांति का पैगाम देना चाहता है। बिहार अपने इतिहास को दोहराना चाहता है। बिहार शताब्दी वर्ष में एक सबल राज्य के रूप में उपस्थित हो कर भारत को गौरव और शक्ति प्रदान करना चाहता है। मैं श्री दुष्यंत कुमार की एक कविता आपके सामने रखना चाहता हूं-

"जा तेरे स्वप्न बड़े हों, भावनाओं की गोद से उतर कर जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें,

चंद तारों से और प्राप्त ऊंचाइयों के लिए रूठना, मचलना सीखें,

हंसे-मुस्कुराएं, गाएं, हर दिए की रोशनी देख कर ललचाएं,

उंगली जलाएं, अपने पांव पर खड़े हों, जा तेरे स्वप्न बड़े हों।

महोदय, आज सदन में श्री अटल बिहार वाजपेयी की आवाज नहीं सुनाई पड़ती। राष्ट्र की सांस्कृतिक आत्मा के रूप में उन्होंने भारत का दिशा-निर्देशन किया। मैं उनकी एक कविता आपके सामने रखना चाहता हूं-

"टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर,

पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर।

झरे सब पीले पात कोयल की कुहूक रात,

प्राची में अरूणिमा को देख-देख गाता हूं,

गीत नया गाता हूं, गीत नया गाता हूं।"

इन शब्दों के साथ बिहार को स्पेशल राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं।

श्री ओम प्रकाश यादव (सिवान): सभापति महोदय, आपने मुझे डॉ. भोला सिंह द्वारा प्रस्तुत संकल्प पर बोलने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

महोदय, मैं इस संकल्प का पूर्ण समर्थन करता हूं। बिहार क्षेत्रफल के मामले में देश का 12वां राज्य है। यहां की 85 प्रतिशत जनता गांव में रहती है। बिहार आर्थिक रूप से हमेशा से ही कमज़ोर राज्य रहा है, लेकिन विभाजन के बाद तो इसकी कमर टूट गई है। बिहार में उद्योगधंधों की शुरू से ही कमी थी, आज़ादी के बाद जो थोड़े बहुत उद्योग लगे, वह दक्षिण बिहार में लगे जो कि बंटवारे के समय झारखण्ड में चले गए। खनिज सम्पदा भी झारखण्ड में चली गई। आज बिहार के पास प्राकृतिक आपदा के रूप में बाढ़ और बालू के सिवा कुछ नहीं बचा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बिहार के गौरवमयी इतिहास को पुनः दुहराने के लिए, वहां की

निरीह जनता को सबल बनाने के लिए, राष्ट्र की मजबूती के लिए बिहार को विशेष राज्य का दर्ज़ा देना अति आवश्यक है।

सभापति महोदय, विभाजन के बाद जो स्थिति हमारे सामने हैं, वह इतना ही है कि विभाजन के फलस्वरूप राज्य की तीन-चौथाई संपदा झारखंड में चली गयी जबकि बिहार के पास तीन-चौथाई देनदारी रह गयी। विभाजन के बाद झारखंड में राज्य की 46 प्रतिशत जमीन चली गयी जबकि तीन-चौथाई से भी ज्यादा आबादी बिहार में रह गयी। विभाजन के बाद 90 प्रतिशत वन संपदा झारखंड में चली गयी और खनिज संपदा से होने वाली आय का 96 प्रतिशत झारखंड में चला गया। राज्य की लगभग 73 प्रतिशत भूमि बाढ़ प्रभावित है और शेष 27 प्रतिशत भूमि सूखा प्रभावित है। ज्यादातर क्षेत्रों से बाढ़ का पानी निकलने में महीनों लग जाते हैं। वर्षाकाल में न सिर्फ गांव के, बल्कि जिला मुख्यालय भी महीनों तक शेष भारत से कटे रहते हैं जिससे ग्रामीणों को भयानक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

सभापति महोदय, केन्द्र सरकार की जो नीति है उसके अनुसार जिन राज्यों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, उन्हें मापदण्डों के तहत विशेष राज्य का दर्ज़ा दिया जाता है। इन मापदण्डों में प्रथम है दुर्गम भौगोलिक स्थिति या राज्य का पहाड़ी होना। दूसरा मापदण्ड है, राज्य में आदिवासी जनसंख्या अधिक मात्रा में होना। तीसरा है, राज्य से किसी अन्य देश की सीमा का लगना। चौथा है, कमजोर आर्थिक स्थिति होना। पांचवा है, राज्य में मूलभूत संरचना का अभाव होना। आप देख सकते हैं कि बिहार इन सभी मापदण्डों को पूरा करता है। केन्द्र सरकार के प्रयासों की वज़ह से राज्य में सड़कों की स्थिति काफी सुधरी है। लेकिन राज्य में अभी भी विद्युत की स्थिति काफी दयनीय है। हम आपसे आग्रह करेंगे कि बिहार को उसके आर्थिक उद्योग-धंधों का जाल बिछाने के लिए विशेष राज्य का दर्जा अगर केन्द्र सरकार प्रदान करती है तो निश्चित तौर पर बिहार एक सबल राज्य के रूप में उभरेगा और राष्ट्र मजबूत होगा।

श्री मंगनी लाल मंडल (झंझारपुर): माननीय सभापति महोदय, श्री भोला प्रसाद सिंह जी ने अपने भाषण में बिहार को विशेष राज्य का दर्ज़ा देने के लिए जो विचार रखे हैं, मैं उसका समर्थन करता हूं तथा जो प्रस्ताव उन्होंने पेश किया है, उसका भी मैं समर्थन करता हूं। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री जी के आर्थिक सलाहकार ने अमेरिका में एक बयान दिया था। बयान में उन्होंने कहा कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति की वार्षिक आय 1000 अमेरिकी डालर हो गयी है। 1000 डालर को मोटे तौर पर हम मान लें 45000 या 46000 रूपए के बराबर। यानि भारत का प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 45000 रूपया है। कुछ राज्यों की आय उससे ज्यादा है। चंडीगढ़ की आय ज्यादा है। मुम्बई, दिल्ली में रहने वालों की प्रति व्यक्ति आय 80000 रूपए से ऊपर है। कहीं-कहीं तो यह 85000 रूपया है। लेकिन बिहार राज्य आज सबसे नीचे के पायदान पर खड़ा है। आज की तारीख में भी उसकी प्रति व्यक्ति कुल वार्षिक आय करीब 5000 करोड़ रूपया है। जहां देश की आमदनी हो प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 80000 रूपया और औसत हो 45000 रूपया। यह प्रधानमंत्री के वित्तीय सलाहकार विदेश में जाकर कह रहे हैं। उसी देश में एक राज्य ऐसा है जहां आज भी प्रति व्यक्ति आय करीब 15000 रूपया है तो यह तो क्षेत्रीय असंतुलन है। जब देश में अमीरी-गरीबी के बीच में, आदमी-आदमी के बीच में, राज्यों-राज्यों के बीच में गैर बराबरी है, तो उस क्षेत्रीय असंतुलन को मिटाने के लिए सरकार ने समय-समय पर फैसला लिया है। सरकार ने योजना बनाई है। दसवीं, 11वीं योजना और अब 12वीं योजना आने वाली है। योजना में सरकार की परिकल्पना यही रहती है कि हम क्षेत्रीय असंतुलन को मिटाएंगे। बिहार इसी क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने की बात कह रहा है। भोला बाबू ने बंटवारे की बात की, बंटवारे से पहले जब बिहार एक था, तब भी हम सबसे निचले पॉयदान पर थे। तब भी हम मांग करते थे कि बिहार का विकास तब तक नहीं होगा, जब तक फेयर इक्वलाइजेशन बिहार के लिए लागू नहीं होगा। हम उस समय भी कहते थे, जब झारखंड हमारे साथ था। हम तब भी कहते थे, जिस माइंस की बात भोला बाबू ने की है कि बिहार में उस समय खनिज, कोयला और अभ्रक था, वह अब झारखंड में चला गया। उस समय में यूरेनियम सिंघभूम जिला में जमशेदपुर के बगल में था, वह आज झारखंड में चला गया। जब सन् 2000 से पहले माइंस, मिनरल्स, यूरेनियम हमारे पास था, तब भी हम कहते थे कि बिहार गरीब है, उस समय सचमुच गरीब था। सन् 2000 से पहले भी बिहार में प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति पूंजी निवेश, विद्युत खपत और प्रति व्यक्ति विद्युत उत्पादन कम था। योजना का आकार 24000 करोड़ रुपए का है यानि प्लान आउटले आज की तारीख में बिहार ने बनाया है, यह पहले के मुकाबले अधिक है, किन्तु आज भी बिहार में प्लान आउटले कम है और तब भी कम था। इसलिए तब भी हमने विशेष आर्थिक सहायता की याचना की थी। जब बिहार एक था तो बिहार की उपेक्षा की गई। बिहार ने तब भी कहा कि हमारा कोयला, अभ्रक, ताम्बा और यूरेनियम लेते हो, लेकिन हमें विशेष आर्थिक सहायता अनुदान के रूप में नहीं मिलती है। बिहार में गरीबी और बेकारी है, यह तब भी हमने कहा था, लेकिन बिहार का बंटवारा हो गया। आप जब बिहार को बांट रहे थे, तब भी हमने कहा। जिस कोयले, फेयर इक्वलाइजेशन, ताम्बे, विद्युत उत्पादन संयंत्र, विद्युत कारखाने, बोकारो स्टील सिटी की बात करते थे, वह झारखंड में चला गया। हमारे पास कुछ नहीं है। हमारे पास कृषि है और आजादी के बाद सबसे ज्यादा चीनी का उत्पादन बिहार करता था। सबसे ज्यादा चीनी मिलें बिहार में थीं। हम कई वर्षों तक चीनी उत्पादन में एक नम्बर पर रहे। आज हमारा चीनी उद्योग समाप्त हो गया है, बंद हो गया।

हमने यही मांग की थी कि हमें बड़ा कारखाना मत दो। हमारी जो मीडियम साइज़ शुगर इंडस्ट्री है, उसका रिवाइवल चाहिए। जब भारत सरकार ने बिहार का बंटवारा किया तो हमने स्पेशल पैकेज की मांग की कि बिजली उत्पादन के लिए, आधारभूत संरचना के लिए, जिसके बारे में कहा गया कि जो क्राइटेरिया एवं पैरामीटर है, स्पेशल स्टेटस स्टेट को देने के लिए जो मानदंड है, उस मानदंड में गरीबी, प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति पूंजी निवेश, प्रति व्यक्ति विद्युत उत्पादन, विद्युत खपत, बेकारी, संपूर्ण सकल घरेलू उत्पादन जो होता है, वह भी है। लेकिन आपने उस दिन भी नहीं सोचा और जब बिहार का बंटवारा कर दिया तो बिहार में शुगर इंडस्ट्री चौपट हो गई। हमने एक लाख 87 हजार करोड़ रुपए का स्पेशल पैकेज मांगा था कि अगर बिहार को बचाना चाहते हैं, वहां अगर गरीबी, बेकारी दूर करना चाहते हैं, प्रति व्यक्ति आय बढ़ाना चाहते हैं, हमारा माइंस और कारखाना आपने ले लिया तो बिहार को स्पेशल पैकेज दीजिए। ये बंटवारे के प्रस्ताव के समय नहीं, इन्होंने प्रधानमंत्री जी का नाम नहीं लिया, स्वर्गीय प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी जी सन् 1989 में बिहार गए थे, तब भी उन्हें कहा गया कि बिहार गरीब है।

आप सब कुछ बिहार से लेते हो, लेकिन बिहार गरीब है, हमारे पास पैसे की कमी है और क्षेत्रीय असंतुलन को मिटाने की संवैधानिक व्यवस्था है, आपका दायित्व है, केन्द्र की जिम्मेदारी है कि क्षेत्र में, देश में क्षेत्रीय असंतुलन मिटे, देश का कोई अंग बीमार नहीं रहे, कोई राज्य बीमार न रहे, कोई राज्य अपंग न रहे, यह

16.16 hrs.

(Shrimati Sumitra Mahajan in the Chair)

यवस्था आपको करनी है। यह 1989 में बिहार सरकार ने राजीव गांधी जी से कहा और तब बिहार सरकार हमारी नहीं थी, सरकार उस समय कर्पूरी ठाकुर जी की नहीं थी, सरकार उस समय कांग्रेस की थी। कांग्रेस की सरकार ने राजीव गांधी जी को कहा। राजीव गांधी जी ने पटना में स्पेशल पैकेज का एलान किया, जो आज तक नहीं मिला। क्यों नहीं मिला, कौन जवाब देगा कि बिहार को राजीव गांधी जी ने जो स्पेशल पैकेज दिया था, बिहार को स्पेशल पैकेज के माध्यम से न तो योजनागत मद में आपने राशि दी, न आपने सीधे राशि दी।

उसके पश्चात् बिहार के बंटवारे के बाद सभी पार्टियों ने सर्व-सम्मति से मिलकर बिहार विधान-मंडल में, बिहार विधान सभा में, बिहार विधान परिषद् में संकल्प पारित किया। बिहार विधान-मंडल ने जो प्रस्ताव पास किया, उसमें दिल्ली सरकार से मांग की कि हमारी स्थिति जर्जर है।

बिहारी सारे देश में हैं। अभी लद्दाख में 18000 फीट की ऊंचाई पर बोर्डर रोड आर्गेनाइजेशन ने सड़क बनाई है। बिहार के एक भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी वहां थे, उन्होंने कहा-सांसद जी, आप तो आये हैं, लेकिन यहां लद्दाख में जो सिंधु नदी पर हाइडल पावर प्लांट बन रहा है, उसमें लेबर कहां के है, यह 18000 फीट की ऊंचाई पर जहां ऑक्सीजन नहीं है, वहां जो लेबर काम कर रहे हैं, वे कहां के हैं, यह सियाचिन में जब जवानों के लिए आप सड़क बनाते हैं, वहां लेबर कहां के हैं। कहा कि यहां बिहार के लेबर हैं और हमने कार्यस्थल पर जाकर देखा तो पता चला कि उनमें दो मजदूर हमारे क्षेत्र के निकल गये। कहने का मतलब है कि बिहार में गरीबी है। सन् 2000 में आपने वायदा किया था कि बिहार के मजदूरों का पलायन रुकेगा, इसके लिए जो भी सम्भव प्रयास होगा, पलायन को रोकने के लिए जो भी योजना लागू करनी होगी, मजदूरों को काम देने के लिए काम दिए जायेंगे। आपने स्पेशल पैकेज नहीं दिया, आपने अनुदान नहीं दिया, हम क्या मांगते। विशेष राज्य का दर्जा आपने बंटवारे के बाद उत्तराखंड को दिया, हमने कोई एतराज नहीं किया। अभी तक आपने 11 प्रदेशों को विशेष राज्य का दर्जा दिया है, जिसमें सन् 2000 में जो उत्तर प्रदेश राज्य का, बिहार का और मध्य प्रदेश का बंटवारा हुआ, विभाजन हुआ, उसमें आपने उत्तराखंड को दिया है, अच्छा किया है। उत्तराखंड डिजर्व करता है और 11 राज्य डिजर्व करते हैं तो बिहार भी डिजर्व करता है।

बिहार में बाहर से पूंजी नहीं आ रही है, किन्तु जो पूंजी निवेश करने वाले हैं, एण्टरप्रिन्योर, उद्योगपति, वे कहते हैं कि हमको करों में छूट मिलनी चाहिए, हमको एक्साइज़ ड्यूटी में छूट मिलनी चाहिए और वह छूट बिहार नहीं दे सकता, बिहार की सरकार नहीं दे सकती है, क्योंकि हमारी आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है।...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): बिहार को जीरो इंडस्ट्रियल स्टेट घोषित किया जाये।...(व्यवधान)

श्री मंगनी लाल मंडल : इसीलिए हम मांग करते हैं, स्पेशल स्टेटस की हम आपसे मांग करते हैं। हमें स्पेशल पैकेज आप नहीं देंगे, मत दीजिए। राजीव गांधी जी ने पैकेज की जो घोषणा की थी, आपने अभी तक नहीं दिया, मत दीजिए, हम आपसे पैसा नहीं मांगते, हम स्पेशल स्टेटस मांगते हैं। स्पेशल स्टेटस जो बिहार को आप देंगे, उससे हमारे यहां पूंजी प्रवाह होगा और पूंजी प्रवाह होगा तो उद्योग लगेंगे। हमारे यहां सबसे रुग्ण उद्योग शुगर इंडस्ट्री है। जो विभाजन का प्रस्ताव है और जो विधेयक है, जो राज्य पुनर्गठन आयोग का भी विधेयक विधान-मंडल में पारित हुआ था, जिसको आपने किया, कहा कि शुगर इंडस्ट्रीज़ रिवाइवल के लिए सरकार सोचेगी, लेकिन आज एक भी हमारी शुगर इंडस्ट्री रिवाइव नहीं हो सकी, इसलिए जो संकल्प इन्होंने पेश किया है, मैं इसका समर्थन करता हूं।

बिहार डिजर्व करता है, बिहार गरीब है, बिहार में गरीबी है, बिहार में बेकारी है, बिहार को मजबूर करके आप मत रखें। बिहार के बारे में कहा गया कि यह देश की आत्मा है। देश की आजादी के आंदोलन में बिहार ने अग्रणी भूमिका निभायी। महात्मा गांधी को सरदार वल्लभ भाई ने तब तक बापू नहीं माना, जब तक महात्मा गांधी को चंपारण की धरती ने महात्मा नहीं बनाया। बिहार को आप मजबूर मत करिए कि बिहार के लोग आंदोलन करें और वे आंदोलनरत हो जाएं। बिहार की ओर से एक मेमोरेंडम आदरणीय प्रधानमंत्री जी को दिया गया है। मैं सदन के माध्यम से मांग करता हूं कि विशेष राज्य के दर्जे के लिए बिहार ने जो मेमोरेंडम दिया है, उसको स्वीकार कीजिए। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दीजिए, इस पर विचार कीजिए। बिहार में गरीबी, बेकारी दूर होगी तो बिहार का जो क्षेत्रीय असंतुलन है, वह दूर होगा। इससे देश मजबूत होगा और देश की गरीबी दूर करने में भी बिहार की अग्रणी भूमिका होगी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं,

श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल): सभापति महोदया, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं डॉ. भोला सिंह जी के इस संकल्प का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं कि बिहार को स्पेशल स्टैटस का दर्जा मिलना चाहिए। मैं कवि दुष्यंत के शब्दों में कहना चाहूंगा - ' पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए, बिहार को एक गंगा मिलनी चाहिए, मेरे सीने में न सही तो तेरे सीने में ही सही, कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए, सिर्फ हंगामा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी यह कोशिश है कि अब सूरत बदलनी चाहिए।' हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि बिहार की सूरत बदले।

सभापति महोदया, मैं उत्तराखंड से आता हूं। उत्तराखंड के अंदर केदारनाथ और बद्रीनाथ में जो सड़क बनती हैं, वहां हिमपात होता है और वे बर्फ पड़ने से अक्सर टूट जाती हैं। सड़क के बगल में टीन के जो बने हुए मकान होते हैं, एक झोपड़ी की तरह जो बने होते हैं, उनमें रहने वाले लोगों से पूछते हैं कि आप लोग इतनी दूर से आए हैं, आप कहां के रहने वाले हो और आप यहां आकर जैसे जगद्गुरू शंकराचार्य आए थे और उन्होंने बद्रीधाम को स्थापित किया, उसका जीर्णोद्धार किया, इसी पुकार से आप आकर हमारे उत्तराखंड के अंदर सड़कों का निर्माण कर रहे हो, कहां के रहने वाले हो, किस राज्य के रहने वाले हो? वे कहते हैं कि हम बिहार के रहने वाले हैं। मैं बिहार की जनता को प्रणाम करना चाहता हूं जो अपने राज्य से निकलकर आज उत्तराखंड राज्य की सड़कों का निर्माण कर रहे हैं, चार धामों को जोड़ रहे हैं, यात्रियों और पूरी सीमाओं को जोड़ रहे हैं, ऐसे उन कर्मठ लोगों को और कर्मयोगियों को मैं प्रणाम करना चाहता हूं। आज वे लोग बिहार से निकलकर भारत के अंदर सड़कों का निर्माण कर रहे हैं, सड़कों का जाल फैला रहे हैं। परंतु आज उनका राज्य किस स्थिति में है, यह देखना होगा और उसके लिए सरकार को एक आर्थिक पैकेज, एक स्पेशल स्टैटस देना होगा, ताकि उनका घर भी आबाद हो सके और वे अपने घर के अंदर भी सड़कों का जाल फैला सकें। मैं कहना चाहूंगा कि बिहार को बने हुए सौ साल हो गए। पहले बिहार बहुत बड़ा था, झारखंड से जुड़ा हुआ था। आज झारखंड निकाल दिया गया, जहां खनिज पदार्थ हैं, कोयला है, माइका है, वे सारे निकाल दिए गए, बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां निकल गयीं। आज बिहार अपने आप में खनिज पदार्थ शून्य हो गया है। ऐसी स्थिति में राज्य को निश्चित रूप से स्पेशल स्टैटस मिलना चाहिए। मैं बिहार को इसलिए प्रणाम करता हूं कि राजेन्द्र बाबू की वह धरती है, जय प्रकाश नारायण जी की वह धरती रही और श्री हंस महाराज का बिहार से विशेष लगाव था। बिहार की स्थिति ऐसी रही कि वहां के लोगों का जो जीवन स्तर था, उसके अंदर जब लोग कहीं शादी में जाते थे, तो किसी का कुर्ता उधार मांगकर जाते थे। वे उसको पहनते तक नहीं थे, कमर के ऊपर रख लेते थे, ताकि यह लगे कि इस आदमी के पास कुर्ता भी है। ऐसी गरीबी जिस राज्य के अंदर हो, निश्चित रूप से उस राज्य को आगे बढ़ने का मौका मिलना चाहिए। उसे स्पेशल स्टैटस मिलना चाहिए। बिहार से गंगा नदी बहती है। उसका भी दोहन होना चाहिए जिससे हम वहां माल ढो सकें, माल की आवाजाही कर सकें और सस्ते रूप में ईंधन की बचत हो। उसका बहुत बड़ा क्षेत्र नेपाल से जुड़ा हुआ है। नेपाल से नदियां आती हैं, उनमें बाढ़ आ जाती है और ऐसा देखने में लगता है कि सारा बिहार पानी में डूब गया है। ऐसी स्थिति में बिहार के लिए निश्चित रूप से स्पेशल स्टैटस होना चाहिए, मैं इसकी मांग करता हूं और इस संकल्प का समर्थन करता हूं। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): सभापति महोदया, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि इस महत्वपूर्ण विषय पर, एवं भोला बाबू के संकल्प पर मुझे बोलने का अवसर दिया है। भोला बाबू के बेहतरीन तकरीर के बाद कुछ बचा नहीं है लेकिन मैं बहुत जिम्मेदारी से इस सदन का और इस देश का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि बिहार जो अशोक, गौतम बुद्ध, भगवान महावीर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण की भूमि है। वहां नालंदा है जो सबसे पुरानी संस्कृति है। वहां विक्रमशिला है, वहां का मैं खूद हूं। जहां पर बोधगया, वैशाली और राजगीर, है। आज दुख होता है कि हम बिहार के लोग विशेष राज्य का दर्जा क्यों मांग रहे हैं? हम में विशेष ऐसा क्या है? सतपाल महाराज जी ने कहा कि देश की तरक्की में बिहार के लोग कैसे अपना कॉन्ट्रीब्यूशन देते हैं। कश्मीर, लद्दाख हो या सियाचीन ग्लेशियर हो वहां भी आप को बिहार के लोग मिल जाएंगे। हमारा विजन बड़ा है। हम बड़े विजन के साथ काम करते हैं। हम इस देश की एक-एक जमीन पर अपना अधिकार मानते हैं। यह हमारा राष्ट्रवाद है। उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक हम उसे अपना आंगन मानते हैं। इसलिए बिहार के लोग बड़ी तादाद में देश के कई स्थानों पर आप को मिलेंगे लेकिन आज दिक्कत यह है कि बिहार के बंटवारे के बाद हमारे पास कुछ बचा नहीं है। हमारे पास सिर्फ नदियां हैं जो नेपाल से आती हैं जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं हैं। जितना पानी वे हमें भेज दें हमें मिल जाता है। अंतरराष्ट्रीय संधि बीच में बाधा बनती है। हम रोड और पुल बनाते हैं लेकिन जब नेपाल से ज्यादा पानी आ जाता है तो वह रोड, पुल-पुलिया बह जाते हैं। जब हम उम्मीद करते हैं कि बाढ़ का हमें कोई पैकेज मिलेगा तो क्वन अच्छा मिलता है। जब दुख में होते हैं तब सब लोग हमें देखने आते हैं। हमें कहते भी हैं कि मदद करेंगे। लेकिन बाढ़ का जो पैसा है वह भी नहीं मिलता है। एक तरफ बाढ़ है दूसरी तरफ दक्षिण बिहार में सूखा पड़ता है। बाढ़ का पैसा मांगते-मांगते जब जबान थक जाती है तब हमें सूखे का पैसा मांगना पड़ता है और दोनों चीजें हमें नहीं मिलती हैं।

बिहार के अंदर एक अच्छी सरकार है। भाई, नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री, इंजीनियर बिहार का पुनर्निमाण कर रहे हैं। हमारे पास बिजली नहीं है। 15 साल लालटेन की रोशनी में हम ने आंख खराब किया। बिहार के साथ कैसे अन्याय हुआ है? हम बिहार के लोगों की आंख जल्दी खराब हो जाती है क्योंकि हम लालटेन में बचपन से पढ़ते हैं।

मैं कोसी का हूं।...(व्यवधान) मैं आपको देख रहा हूं। दूर की नज़र तेज है, आप पर नज़र है।...(व्यवधान)

सभापति महोदया : लालटेन भभकती भी है, ध्यान रखिए। आप आगे बोलिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं कोसी के भागलपुर से सांसद हूं।...(व्यवधान)

महिला और बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री (श्रीमती कृष्णा तीरथ): नदियों में जब बाढ़ आती है तो उस पानी को सेव करने के लिए कोई रास्ता बता दीजिए।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : उस तरह का रास्ता तो आएगा, लेकिन उसमें आपके सहयोग की जरूरत है। आपकी सरकार का जो असहयोग आंदोलन भारतीय जनता पार्टी और जेडी (यू) सरकार के साथ

चल रहा है, उसमें दिक्कत आ रही है।...(व्यवधान)

सभापति महोदया : आपस में बातचीत मत कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : यह ऐसा विषय है कि इतने वक्ता बोले, किसी को किसी ने नहीं टोका, लेकिन हमसे सबका बड़ा प्रेम है। मैं जब भी खड़ा होता हूं...(व्यवधान)

सभापति महोदया : आपसे सब लोग प्रेम करते हैं, लेकिन आप आगे बोलिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : हमारे मित्र हैं, लेकिन...(व्यवधान) बिहार में उस अंधेरे को देखा। यहां हम 543 सांसद हैं। हम गांवों से आते हैं। हमने गरीबी देखी है। लालटेन में पढ़े हैं। हमें किसी के घर जाकर गरीबी देखने की जरूरत नहीं है। हमने इसे एहसास किया है कि धुं का आंख पर क्या असर होता है, जब पत्ते से खाना बनता है तो उस पत्ते के जलने का आंख पर क्या असर होता है। गर्मी में लालटेन में पढ़ने के बाद पसीना आए और उसके बाद जब ठंडी हवा बादेसबा आती है तो शरीर पर उसका कैसा आनंद प्राप्त होता है, यह सब हमने देखा है।...(व्यवधान)

चौधरी लाल सिंह (उधमपुर): गैस से कैसा लगता है।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : गैस वाले लोग गरीब लोगों के घर जाकर देखते हैं कि गरीबी क्या होती है, अंधेरा कैसा होता है। हमें कहीं जाकर देखने की जरूरत

नहीं है। हम भी युवा हैं, सांसद हैं। सौभाग्य रहा है, आपके साथ मंत्री रहे हैं। हमने इन चीजों को नज़दीक से देखा है। आज बिहार के लोगों का यह दर्द है। बिहार आज स्पैशल पैकेज क्यों मांग रहा है, क्योंकि जो हमारा खनिज, खदान, कोयला था, जब ज्वाइंट बिहार था तो रेल बिछा दी गई। हमारे यहां बिजली के कारखाने नहीं लगाए गए। हमारे यहां रेल की पटरी बिछाकर हमारे कोयले, बॉक्साइड, लोहे को वहां से ले जाया गया। तब भी बिहार के किसी व्यक्ति ने नहीं कहा कि यह हमारा है, इसे मत ले जाइए। लेकिन आज अगर हम बिजली घर स्थापित करना चाहते हैं तो कोल का लिंकेज नहीं है। उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और झारखंड के पास क्षमता है। वे पिट हैड पर बिजली घर स्थापित कर सकते हैं, लेकिन बिहार के कहलगांव, हमारे लोक सभा क्षेत्र में एनटीपीसी का सिर्फ एक थर्मल पावर है। वहां से बिजली बनती है और भागलपुर, पटना क्रॉस करके पंजाब चली जाती है। आज हमें वहां बिजली चाहिए। हमें बिजली में हक नहीं मिल रहा है। बिहार का केन्द्र सरकार पर 1800 मेगावाट बिजली का हक बनता है, लेकिन भारत सरकार 900 मेगावाट से ज्यादा बिजली नहीं दे रही है। हमें तालचर, फरक्का से बिजली दी जा रही है। वहां इनका यूनिट इतना खराब है कि आधी बार बैठ जाता है। हमें उसका कोई फायदा नहीं होता। आज बिहार में अंधेरे की जिम्मेदारी केन्द्र को लेनी पड़ेगी और यह मानना पड़ेगा कि अगर दस करोड़ बिहारी तरक्की नहीं करेंगे तो यह देश तरक्की नहीं करेगा। आप यह मानकर चलें कि बिहार के लोग इसी देश के हैं, बिहार इस देश का अभिन्न अंग है। लेकिन आज क्या हो रहा है? आपकी नज़र बदल गई। हम कह रहे हैं कि हमारी नज़र कमज़ोर हो रही है और आपकी नज़र बदल गई है। हर बार मंत्रिमंडल का विस्तार होता है। नेहरू जी के जमाने में बिहार के डा. राजेन्द्र प्रसाद देश के प्रथम राष्ट्रपति बने। जहां हर सरकार में बिहार का कोई न कोई व्यक्ति देश की पंचायत, कैबिनेट में बैठता था। यूपीए वन में रघुवंश बाबू बैठते थे। लेकिन आज बड़ी पंचायत में एक भी बिहारी नहीं है। कांग्रेस के दफ्तर के बाहर लिखा हुआ है - Bihari is not allowed in the Government. ...(व्यवधान) कैबिनेट के बाहर, मनमोहन सिंह जी के बाहर ...(व्यवधान) बोर्ड लगा हुआ है।...(व्यवधान) हम बोल रहे हैं, सरकार को सुनने में दिक्कत हो रही है।...(व्यवधान) हम सरकार की बात कर रहे हैं। यह सदन की बात है।...(व्यवधान) क्या स्पीकर साहिबा कैबिनेट में बैठती हैं। लाल सिंह जी, आप इतने सीनियर मैम्बर हो गए हैं। आपको नहीं बना रहे हैं, हमें यह भी पता है। आप मेन जम्मू से जीतकर आते हैं, लेकिन आपको मंत्री नहीं बनाया। ...(व्यवधान) आज मौलाना असरारूल हक साहब किशनगंज से, जहां से मैं चुनाव जीता, काफी पढ़े-लिखे हैं, लेकिन उर्दू जानते हैं। इनके पास बेहतरीन आलिम है। अपने जमाने में इनकी उर्दू की लिखावट का कोई मुकाबला नहीं है। आप लोगों को अंग्रेजी बोलने वाला ज्यादा पसंद है। उर्दू वाले का कोई टैलेंट ही आपकी नजर में नहीं है, यानी एक मौजूद है, वह भी ऑप्शन नहीं। आप राज्य सभा का पैनल बनाते और उनको दूसरी जगह से राज्य सभा में लाते। अगर आपको मौलाना असरारूल हक साहब का चेहरा पसंद न हो, तो बिहार के कोई और लोग, जो आपके लायक होते, वे मंत्रिमंडल में रहते। हमें इस पर एतराज नहीं है, लेकिन उस पंचायत में बिहार की आवाज कौन उठायेगा? आज बिहार की आवाज उठाने वाला कैबिनेट में कोई नहीं है। अगर बिहार के साथ अन्याय होगा, तो वहां कोई बोलने के लिए तैयार नहीं है। हम आपको रहमो-करम पर हैं कि वहां पर अगर कोई और मंत्री हमारे दर्द को रख दे, तो रख दे। लेकिन भारत के इतिहास में यह पहला मौका है, जब आप बिना बिहारी के देश चला रहे हैं, बिना बिहारी के कैबिनेट चला रहे हैं। आपकी नीयत थी, हमें पता है। हम आपसे उम्मीद क्या करें, लेकिन फिर भी आप सरकार में हैं। जनता ने आपको उस मुकाम पर उधर बैठाया है, तो हम आपसे उम्मीद करेंगे। आप रूलिंग पार्टी की तरह बिहेव कीजिए। सब मंत्री लोग हैं, बड़ी जिम्मेदारी है। उनकी कार पर बत्ती लगी होती है और सायरन बजता रहता है। आप गंभीर बैठकर सब बात सुना कीजिए, क्योंकि आप सरकार हैं, विपक्ष में नहीं हैं। ...(व्यवधान) इसलिए आपको हमारी, विपक्ष की बात को सुनना है, धीरज रखना है। अगर आप हमारी तरह व्यवहार करेंगे, तो आपको कोई मंत्री नहीं मानेगा और बाहर कहेगा कि यह भी संसद में रोज हल्ला करते रहते हैं, इसलिए लगता है कि यह सांसद ही हैं। आपको मंत्री की तरह, अभी आपको माइक को पटकना नहीं है, धीरज से बैठना है। हम उम्र में कम हैं, लेकिन मंत्री पहले बन गये थे। आपको कोई दिक्कत हो, तो हमसे भी सलाह-मशविरा कर सकते हैं।

सभापति जी, मैं आपके जरिये सदन में बिहार का दर्द रख रहा हूं। देश का पहला राष्ट्रपति जिस प्रदेश ने दिया हो, आज वह बार-बार आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है कि विशेष राज्य का दर्जा चाहिए। लेकिन आज क्या हो रहा है? प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के अन्तर्गत सब राज्य में सड़क बन गयी। बंगाल में बन गयी, अश्विनी कुमार के राज्य पंजाब में बन गयी, मीणा जी के राज्य राजस्थान में बन गयी, लेकिन रघुवंश बाबू जो थोड़ा बहुत हमें देकर गये थे, जैसे ही रघुवंश बाबू चले गये, वहां सड़क का काम एकदम रुक गया। हमें प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना में पैसा नहीं मिल रहा। प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना का पैसा रोककर बैठे हुए हैं और तीन महीने में तीन मंत्री बदल गये हैं। हम एक को रिप्रैजेंटेशन देते हैं। अभी हम श्री विलास राव जी से मिलकर आये थे कि प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना का पैसा हमें नहीं मिल रहा। राजीव गांधी जी का नाम हमने सुबह लिया कि राजीव गांधी जी देश के नेता थे, पायलट थे, इंडियन एयरलाइंस के पायलट थे। आपने इंडियन एयरलाइंस ही खत्म कर दिया। उसी तरह राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना है। आपने बिहार में राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना चलाई है। वहां बोर्ड लगा हुआ है। आपने वहां पर छोटे-छोटा ट्रंसफार्मर 16 केवीए, यानी बाल्टी जितना बड़ा ट्रंसफार्मर का लगा दिया।

सभापति महोदय, रमा देवी जी कह रही हैं कि ट्रंजिस्टर की तरह लगा दिया है। वह लटका दिया है और लोग उससे उम्मीद लगाये हुए हैं। राजीव गांधी जी का फोटो और एक बोर्ड राजीव गांधी विद्युतीकरण वहां लगा दिया है। वह बोर्ड स्टील का है, जिसे कोई हिल्ला-ढुला नहीं सकता। लेकिन वह ट्रंसफार्मर गायब हो गया, तार गायब हो गयी। वह जल ही नहीं रहा, यानी पूरे बिहार में राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना के तहत हमारे साथ बहुत अन्याय किया है।

सभापति जी, मैंने आपके यहां इंदौर के एयरपोर्ट का सौंदर्यीकरण किया था। देश में महाराष्ट्र बड़ा प्रदेश है। वहां से बड़े मंत्री हैं, जैसे शरद पवार, प्रफुल पटेल, विलास राव देशमुख, सुशील कुमार शिंदे जी हैं। हम जितने नाम गिनेंगे, उतने नाम हमें याद भी नहीं आयेंगे, यानी इतने मंत्री हैं। लेकिन उतनी ही सीट बिहार की है। अगर हम महाराष्ट्र से बिहार की तुलना कर लें, तो महाराष्ट्र में मुम्बई एयरपोर्ट, पुणे एयरपोर्ट, नागपुर एयरपोर्ट, औरंगाबाद एयरपोर्ट और नवी मुम्बई एयरपोर्ट भी आ रहा है, लेकिन बिहार में ले देकर एक पटना एयरपोर्ट है। क्या आप दस करोड़ बिहारियों को चाहते हैं कि बैलगाड़ी पर चलें? आप हमारा हक कहां-कहां मार रहे हैं? हमने एक एयरपोर्ट गया में बनाया था, शरद जी ने शुरूआत की, मैंने उसको पूरा किया। इनके पास उद्घाटन के लिए भी टाइम नहीं है। पुराने मंत्री जी पांच साल वहां गए नहीं, नए मंत्री जी से उम्मीद करते हैं। आज वहां डोमेस्टिक फ्लाइट्स भी नहीं चल रही हैं। मैं अनुरोध करना चाहता हूं कि इस पर सियासत मत कीजिए। बिहार देश का अभिन्न अंग है, यह बात बार-बार आपको याद दिलाते हुए हमें अच्छा नहीं लग रहा है। आप मंत्री मत बनाइए, कोई बात नहीं है। हम लोग बनेंगे, तो इकट्ठे छप्पर फाड़ के बनेंगे, इकट्ठे 12-15 मंत्री बनेंगे। अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार थी, 12 मंत्री बने थे। ...(व्यवधान) गया वाला हमने ही बनाया था। ...(व्यवधान) और पटना एयरपोर्ट का रेनोवेशन किया। बड़ी मुश्किल से धोबीघाट दिया था इन्होंने। पैसा देकर वह जमीन ली थी। ...(व्यवधान) मैं उस विवाद में नहीं जाना चाहता। मैं अनुरोध करना चाहता हूं कि अगर नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में बिहार तरक्की के रास्ते पर चल रहा है, तो आप सहयोग कीजिए। यह देश तब तरक्की करेगा, जब देश का एक-एक राज्य तरक्की करेगा। यह देश तब तरक्की करेगा, जब एक-एक व्यक्ति तरक्की करेगा। नीतीश कुमार जी के रास्ते को रोकिए मत। दरिया अपना रास्ता चाहती है और जानती भी है। हम लोग आपके रोकने से रुके नहीं। चुनाव परिणामों पर ध्यान दीजिए। रूलिंग पार्टी के लोग रिसर्च कीजिए कि कभी यूपी-बिहार में आपकी बड़ी साख होती थी। आज क्या वजह है कि बिहार से आप दो सांसद है - एक हमारी अध्यक्ष महोदया हैं, उनका अपना कद है, नाम है, बाबू जी की बेटी हैं और दूसरे मौलाना असरारुल हक साहब हैं। इन्होंने मुझसे भी दो चुनाव लड़े हैं। मौलाना असरारुल हक साहब जब निर्दलीय भी लड़ते हैं, तो मिनिमम दो लाख वोट लाते हैं। वह किसी के रहमोकरम पर निर्भर नहीं हैं। ठीक है कि इस बार आपकी पार्टी से चुनाव लड़े और जीत गए। आप यह समझिए कि आप वहां कोई

बहुत अच्छी स्थिति में नहीं हैं। आपको दो बड़े व्यक्तित्व मिल गए, इसलिए आपका वहां खाता खुल गया। लेकिन अगर आपने यही रास्ता अपनाया, आपने विधानसभा चुनावों में कितने हेलीकाप्टर वहां उतारे, कितने लोग यहां से गए, जा-जाकर वहां भाषण दिए, उसका रिजल्ट क्या मिला - हम दो, हमारे दो, कुल मिलाकर चार सीटें। इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि राजनीति कीजिए। राजनीति में उपेक्षा करके मत चलिए। यह मत समझिए कि एक बार सीट नहीं मिली, तो आप हमसे बदला ले लेंगे। एक बार काम कीजिए, एक बार मौका दीजिए, सहयोग कीजिए। आप बीजेपी-जेडीयू को सहयोग मत कीजिए, नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री हैं, उनको सहयोग कीजिए। आप यह मानकर सहयोग कीजिए कि बिहार की दस करोड़ जनता का दर्द है। आप उस दर्द पर मरहम लगाइए, उस जख्म पर मरहम की जरूरत है, उस पर आप नमक मत छिड़किए। मैं भोला बाबू के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए अनुरोध करता हूं कि हमारे यहां एक सेंट्रल यूनिवर्सिटी मोतिहारी में मिलनी थी, जो रमा देवी जी का क्षेत्र है। वह हमें नहीं मिली है। मंत्री जी जिद पर अड़े हैं कि पटना में देंगे। कहां देंगे, यह बिहारी तय करेंगे। आप चांदनी चौक में बनाइए। आप तय कर रहे हैं कि हम चंपारण में नहीं देंगे। हम लोग चाहते हैं कि जहां से बापू ने आंदोलन शुरू किया, वहां यूनिवर्सिटी बने। हम लोग गांधी जी के रास्ते पर चलना चाहते हैं, आप कह रहे हैं कि नहीं गांधी जी के रास्ते पर नहीं चलेंगे। अब इसमें क्या दिक्कत है? इसलिए अगर चंपारण में यूनिवर्सिटी बनेगी, तो ऑक्सफोर्ड के पढ़े-लिखे सिब्बल साहब को क्या दिक्कत है?

मेरा दूसरा अनुरोध है कि नालंदा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सेंट्रल यूनिवर्सिटी बन रही है, उसमें बहुत काम हो रहा है, यहां बिल भी पास हुआ, केन्द्र सरकार भी सहयोग कर रही है। नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला, तीन प्राचीन विश्वविद्यालयों में से तक्षशिला पाकिस्तान में चला गया, अब केवल दो धरोहरें बची हैं आपके पास। नालंदा को भाई नीतीश कुमार जी रिवाइव कर रहे हैं, आपने भी सहयोग किया है, लेकिन विक्रमशिला का क्या होगा, जहां से शाहनवाज हुसैन सांसद है। कुछ आप लोगों को इसकी चिंता है या नहीं? आज विक्रमशिला के अंदर भी उसी लेवल की यूनिवर्सिटी बनाइए। बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटीज बनाने की बात कर रहे हैं, अपनी संस्कृति पर गर्व कीजिए। आप यह मानकर चलिए कि जैसे नालंदा और विक्रमशिला के नाम से बड़ी यूनिवर्सिटी बनेगी, तो देश का नाम होगा, पूरी दुनिया में भारत का नाम होगा, इसमें केवल बीजेपी-जेडीयू का नाम नहीं होगा। इसमें डरिए मत, राजनीति में उतार-चढ़ाव आता रहता है, दिल छोटा मत कीजिए। बड़े दिल से काम कीजिए। छोटे मन से कोई बड़ा काम नहीं होता है, इसलिए दिल बड़ा कीजिए और बिहार की दस करोड़ जनता को उम्मीद है कि जो संकल्प भोला बाबू लेकर आए हैं, इस

संकल्प पर आपका पॉजिटिव नोट आएगा। जैसे अभी सतपाल महराज जी ने बोला, इसी तरह से सब लोग सहयोग कीजिए और बिहार के विकास में नीतीश कुमार जी का सहयोग कीजिए। यही हम आपसे उम्मीद करते हैं और उम्मीद करते हैं कि रघुवंश बाबू भी हम लोगों से सहयोग करने की बात कहेंगे। इनका साथ मिलेगा, तो जरूर हम लोग आगे तरक्की करेंगे।

श्री मोहम्मद असरारुल हक़ (किशनगंज): सभापति जी, भोला जी ने प्राइवेट मेम्बर्स बिल पर जो तसव्वुर और संकल्प पेश किया है, उसके सिलसिले में आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं उसके लिए दिल की गहराई से आपका शुक्रिया अदा करता हूं। मैं उनके प्रस्ताव और जो उन्होंने तजवीज पेश की है, उसकी मैं पूरी तरह से हिमायत करता हूं और समर्थन देता हूं।

बिहार के सिलसिले में बहुत सी बातें अभी यहां कही गई हैं। मैं उन्हें दोहराने नहीं जा रहा हूं, न ही वक्त है कि उन्हें दोहराया जाए। लेकिन मैं एक बात जरूर कहूंगा कि वह एक ऐसी रियासत, ऐसा सूबा और ऐसी जमीन है कि अगर उस जमीन की तारीख को, उसके इतिहास को, उस जमीन के लोगों ने कम से कम पांच हजार साल की तारीख जो हमारे सामने है, उस पांच हजार साल की तारीख में उस धरती के सपूतों ने जो-जो कारनामे अंजाम दिए हैं, अगर उस सरजमीं को और उसकी तारीख को तारीख से निकाल दिया जाए तो मैं समझता हूं कि भारत की तारीख मुकम्मल नहीं रहेगी, पूरे भारत की तारीख नामुकम्मल हो जाएगी।

हमें इस बात को महसूस करना चाहिए कि हमारे देश के वे हिस्से, वे इलाके, वह जमीन, जहां के लोगों ने इस देश को बहुत कुछ दिया है, जिंदगी के किसी भी मरहले में हमें उनको नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यकीनी तौर पर उनको भी बराबर का दर्जा दिए जाने की कोशिश करनी चाहिए। अगर आज इस मुल्क में डेमोक्रेसी है, जम्हूरियत है, आज हम फL◌ा से इस बात को कहते हैं कि पिछली छः दहाई में आजादी के बाद जिस तरह से इन सालों के अंदर इस मुल्क ने जो सबसे बड़ा कारनामा अंजाम दिया है, वह कारनामा यह है कि इस मुल्क में हमने जम्हूरियत को बचाकर रखा है। इस जम्हूरियत का संकल्प और इस जम्हूरियत की बुनियाद उसी सरजमीं ने रखी थी, वह सरजमीं जो बिहार की सरजमीं है।

आज अगर हम इस देश के अंदर इस बात को महसूस करते हैं कि इस देश में इन्सानियत है, इस देश में शराफत है, यहां पर हया है। आज जो यहां की तहजीब है, ईस्टर्न सिविलाइज जिसे हम कहते हैं, यह जो तहजीब है, इसकी असल जान रुहानियत है। वह रुहानियत उसी सरजमीं से महात्मा बुद्ध ने दी है और वहां के तमाम ऋषियों और मुनियों ने दी है। इस सरजमीं को अगर तहजीब दी है, उसी सरजमीं ने दी है। आज हमें यह कहते हुए बहुत दुख होता है कि वह सरजमीं जिसने भारत को बहुत ऊंचा उठाया, जिसने हिन्दुस्तान की अज़मत को बढ़ाया, जिसने हिन्दुस्तान को जमीन से उठाकर आसमान तक पहुंचाया, आज वह सरजमीं और लोग तबाहियों के शिकार हैं। जिस महाज पर चले जाओ, जिस शोबे में चले जाओ, हर जगह लोग तबाही और बर्बादी के शिकार हैं। - तन्हा दाग-दाग शुद, उम्बा गुजा-गुजा न हम, आज उसका पूरा जिस्म ही दागदार है, हम कहां-कहां पर उस पर फुहा रखने की कोशिश करेंगे।

आज उस सरजमीं के उन लोगों ने, जिन्होंने देश की रहनुमाई की, आज पूरे भारत के मुख्तलिफ सूबों के इलाकों में आकर सड़कों की मिट्टी छान रहे हैं। आज वहां जाएं, किसी शादी में जाएं या किसी मौत की तकरीम में जाएं, आप गहराई से देखेंगे कि उस शादी में या मौत में जो लोग शरीक होने के लिए आते हैं, उनमें ज्यादातर बच्चे मिलेंगे या बूढ़े मिलेंगे, नौजवान नहीं हैं। वे अपनी मां की गोद को छोड़कर दिल्ली और पंजाब की सड़कों पर घास काट रहे हैं, खेती कर रहे हैं या सड़कें बना रहे हैं। यह हालत उसकी है, जिसने आजादी के बाद इस मुल्क को सबसे पहला राष्ट्रपति दिया। वह रियासत, जिस रियासत ने अगर गांधी जी को सबसे पहले वहां जाकर सत्याग्रह का मौका दिया। जब आप पटना पहुंचे थे, यहां से गांधी जी के साथ जो लोग भी साथ गए थे, वे सब छोड़ गए थे और पटना तक गांधी जी

चंद आदमियों के साथ पहुंचे थे। वहां दो ही नौजवान उनके इस्तेकबाल के लिए खड़े थे। एक नौजवान वह था जो बाद में सदरे जम्हूरिया बना डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

और एक नौजवान प्रो. बारी थे जो मजदूरों के लीडर बने। हम देख रहे हैं कि हर महाज के अंदर वहां कमी है, इसलिए उस स्टेट पर खास तवज्जोह देने की जरूरत है। किसी भी कौम की तरक्की के लिए कुछ बनियादी चीजें चाहिएं। उसे तालीम और सेहत चाहिए और उसके जरिये मोआश चाहिए। मोआश का जरिया के जरिये वहां पर खेती-बाड़ी है। वहां हर साल सैंकड़ों-हजारों एकड़ जमीन कटकर दरिया में शामिल हो जाती है। मसला केवल उनके घरों की तबाही का नहीं है, मसला यह है कि उनका जरिया मोआश वही खेत हैं जिससे वे गल्ला पैदा करते हैं और उससे उनकी जिंदगी बसर होती है। उसमें भी एक साल फ्लड आता है और एक साल सूखा पड़ता है। इस मुसीबत में वे किसी तरह अपनी जिंदगी गुजारते हैं और हर साल वहां दरिया के कटाव से तबाही होती है।

महानंदा बेसिन बनाने की तजवीज रखी गयी, लेकिन 8-9 साल हो गये, पैसा नहीं है और उस बेसिन का इस्तेमाल नहीं हो रहा है। महानंदा, डोक नदी, परवान नदी, कनकेई नदी पूर्व और उत्तर बिहार के इलाकों में तबाही मचाती हैं। ये तमाम नदियां हिमालय से आती हैं और इन नदियों को जोड़ने के लिए और उनके कटाव को रोकने के लिए पैसा दिया गया था, लेकिन वह काम नहीं हुआ। शुरू में काम शुरू हुआ था और उसके लिए 15 करोड़ रुपया भी यहां से स्टेट को गया, लेकिन वह काम अब तक नहीं हुआ। आज अगर उसकी मोआशी हालत को बचाना है, दुरुस्त करना है और ये बच्चे जो यहां पर हैं और इन्हें अपने इलाकों में लौटना है तो वहां की खेती-बाड़ी के इंतजाम को दुरुस्त करना होगा और उसके लिए स्पेशल पैकेज देकर रोजगार फराहम कराना होगा, ताकि वे आगे बढ़ सकें।

जहां तक तालीम का मामला है, वह स्टेट जिसने आज से 6 हजार साल पहले, दुनिया को साइंस से मुत्तारिफ कराया, आज अगर हम नालंदा की बात करते हैं तो नालंदा हमारे लिए गौरव की बात है कि नालंदा ने दुनिया को सबसे पहले साइंस से मुत्तारिफ कराया। ...(व्यवधान)जी हां, विक्रमशिला ने भी मुत्तारिफ कराया। वह सूबा जिसने सबसे पहले दुनिया को साइंस से अवगत कराया, आज उस स्टेट की तालीम की रेशो भारत में सबसे कम है। वहां आज तालीम की 54 प्रतिशत रेशो है। आज वहां इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं है। मेरे जिले किशनगंज की 12 लाख की आबादी है और 17 हाई-स्कूल हैं। इस साल बहुत हिम्मत करके 5 स्कूलों की मंजूरी दी गयी है। क्या 22 हाई-स्कूलों से आप 12 लाख आदमियों को पढ़ाने का इंतजाम कर सकेंगे?

सेहत की हालत यह है कि इलाज के लिए वहां के लोगों को दिल्ली आना पड़ता है, वहां गरीब आदमियों के इलाज का कोई इंतजाम नहीं है। उन्हें तालीम में आगे बढ़ाइये, सेहत का इंतजाम कीजिए। माननीय शाहनवाज हुसैन लाइट के मामले में कह रहे थे यह सही है, वहां लाइट न होने की वजह से खेती में भी हमें दुश्वारी होती है। वहां पावर हाउस बनाने की जरूरत है, बिजली को बढ़ाने की जरूरत है। इन सारी चीजों में मदद करने के लिए यकीनी तौर पर उन्हें स्पेशल पैकेज देना चाहिए। अगर आप दो लाख करोड़ रुपया उन्हें दे दो तो वहां काम शुरू हो सकता है।

श्री मंगनी लाल मंडल : उसे विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए।

श्री मोहम्मद असरारुल हक़ : उसका समर्थन तो मैंने कर ही दिया है। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि स्टेटस के साथ-साथ हमें पैसे चाहिए। बिहार को दो लाख करोड़ रुपया चाहिए, जिससे हम तमाम कामों को अंजाम दे सके। यह कहते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): सभापति महोदया, आपने मुझे बहुत ही विद्वान सदस्य डॉ. भोला सिंह द्वारा लाए गए संकल्प बिहार राज्य को विशेष दर्जा देने के लिए, पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। कुछ दिनों पहले श्री रंजन यादव जी ने प्राइवेट मैम्बर बिल में विधेयक ले कर आए थे, जिसमें बिहार राज्य को विशेष पैकेज देने की बात कही गई थी, तब कई सम्मानित सदस्यों ने अपने विचार सदन में रखे थे। मैं कहना चाहूंगा कि यह बात सत्य है कि हिंदुस्तान के राज्यों की समीक्षा की जाए, तो मेरे खयाल से सबसे गरीब राज्यों में से बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ आदि हैं। जो नए राज्य बने हैं, उनकी हालत भी बहुत खराब है। डॉ. भोला सिंह जी संकल्प ले कर आए हैं, वह बहुत वाजिब है और समय की पुकार है। जहां तक देखा गया है, जब बिहार प्रदेश का बंटवारा हुआ, नया प्रदेश झारखंड बना, तो तमाम प्राकृतिक सम्पदा झारखंड में चली गई। आज बिहार में जो बचा है, वह पुरानी रियासत या जिन चीजों का अन्य सदस्यों ने जिक्र किया, केवल वही बची हैं। हमारे कई साथी जैसे तेलंगाना की मांग कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश के लोग कह रहे हैं कि तेलंगाना नहीं बनना चाहिए। कुछ लोग अपने फायदे के लिए नए राज्य की मांग करते हैं। जब नया राज्य बनता है, तो वह महसूस करता है कि हम पिछड़ गए और जिस राज्य से अलग होते हैं, वह भी साथ में कमजोर हो जाता है। छत्तीसगढ़ अलग राज्य बना है। आज वहां की हालत यह है कि वह पूरी तरह से नक्सलवाद से प्रभावित है। वहां केंद्र सरकार की जो योजनाएं चलती हैं, नक्सलवाद के कारण वे पूरी तरह से लागू नहीं हो पाती हैं। वहां का प्रशासन और जनता भय से रह रहे हैं। नक्सल प्रभावित एरिया में एक तरह से उनकी दूसरी सरकार चलती है।

बिहार के बारे में सत्य कहा गया कि बिहार का अपना राजनीतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व रहा है। जैसे शिक्षा के क्षेत्र में बताया नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशीला विश्वविद्यालय रहा है। राजनीतिक प्रतिष्ठा रही है। देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से लेकर तमाम बड़े राजनीतिक लोग बिहार से संबंधित रहे हैं, जिन्होंने देश का मान सम्मान बढ़ाने का काम किया है।

16.59 hrs.

(Shri Satpal Maharaj *in the Chair)*

बिहार में ऐसे व्यक्तित्व हुए, जिनके कृत्यों को हम आज भी याद करते हैं। हमें आज यह कहते हुए बहुत दुख होता है कि बिहार राज्य बहुत पिछड़ा हुआ है चाहे गया

जिले को ले लीजिए चाहे बौद्ध स्थल ले लीजिए। बिहार निचला इलाका होने के नाते वहां बाढ़ की विभीषिका से जनता त्रस्त रहती है और कभी-कभी बारिश न होने की वजह से सूखे की स्थिति से भी वहां के लोगों को निपटना पड़ता है। ऐसे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाले राज्य को विशेष राज्य का दर्जा देने की जो बात कही जा रही है, मेरे खयाल से बहुत वाजिब है।

एक बार हुक्मदेव नारायण यादव जी बोल रहे थे कि वहां पता ही नहीं चलता कि गढ्ढे में सड़क है या सड़क में गढ्ढा है। डॉ. रघुवंश प्रसाद जी बैठे हैं। जब ये ग्रामीण विकास मंत्री थे, उस समय कई सदस्यों ने यहां मांग उठाई कि एक हाईवे सड़क है और आज भी नहीं बन पाई है। बिजली और सड़क लोगों की या राज्य की लाइफ लाइन होती है। राज्य के विकास में विशेष भागीदारी इन दोनों चीजों की होती है।

17.00 hrs.

अगर देखा जाए तो आज केन्द्र और राज्यों में समन्वय न होने के कारण राज्यों की स्थिति बहुत पिछड़ गई है और विकास नहीं हो पा रहा है। समय समय पर हम लोगों ने देखा कि चाहे वह प्रश्नकाल हो या बहस की बात हो या बिल की बात हो, केन्द्र राज्य को दोषारोपण करता है और राज्य केन्द्र को दोषारोपण करता है जबकि मूल्यांकन बनाकर अगर आप पैसा दे रहे हैं तो उसकी मोनीटरिंग होनी चाहिए। उसका मूल्यांकन भी होना चाहिए कि जो पैसा हम राज्यों को दे रहे हैं, वह वास्तविकता में खर्च हो रहा है, उन विभागों को जा रहा है या नहीं जा रहा है। वहां की स्थिति क्या है? लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है।

आज यहां पर बात कही गई। अभी हम पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर के साथ आइसलैंड गये थे। आइसलैंड में वहां पर जो थर्मल पॉवर है, एक तरीके से ज्वालामुखी से जो गैस निकलती है, उससे टर्बाइन चलाकर बिजली पैदा की जाती है। वहां के एम्बैसडर ने इंडियन्स को बुलाकर डिनर दिया था। वहां मैंने देखा कि वहां बिहार के लोग थर्मल पॉवर में थे, इंजीनियर थे। बिहार के लोग दुनिया में छाये हुए हैं। केवल यह देश की ही बात नहीं है। आज अगर मजदूर की बात होती है तो लोग कहेंगे कि बिहार से मजदूर ले आइए। बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्य हैं, इनके यहां गरीबी है, आज व्यक्ति अपना शहर, अपना गांव छोड़कर दूसरे प्रदेशों में मजदूरी करने जा रहा है। इसलिए स्थिति बहुत खराब है।

मैं उत्तर प्रदेश के विषय में भी कुछ कहना चाहूंगा। हो सकता है कि उत्तर प्रदेश के लिए यहां पर मांग उठे। हमारे प्रदेश की तो यह स्थिति है कि प्रदेश में चार राज्यों की मांग हो रही है। एक तो उत्तराखंड पहले से ही चला गया और उत्तराखंड के जो तमाम राजनैतिक मित्र हैं, वे मिलते हैं तो कहते हैं कि पहले हम गर्व के साथ कहते थे कि हमारी 85 सीटें थीं। हम लोग और मंत्रियों को नहीं समझते थे लेकिन आज यह स्थिति है कि आप वहां से आते हैं, आज हम यह महसूस करते हैं कि हम चार-पांच एमपीज रह गये हैं। एक तरीके से हमें भी नुकसान हुआ है। हम लोग पर्यटन के क्षेत्र में जाते थे लेकिन जब से राज्य अलग हुआ है, ...(<u>व्यवधान</u>) आप भी महसूस कर रहे हैं, आपको अच्छा लग रहा हो लेकिन उत्तराखंड बनने के बाद हमें बहुत पीड़ा है। हम केवल मांग कर रहे थे कि हरिद्वार उत्तर प्रदेश में दे दिया जाए। लेकिन नहीं मिल पाया है।...(<u>व्यवधान</u>) मंत्री जी कह रहे थे कि पहले उत्तर प्रदेश बैठा हुआ शेर लगता था लेकिन अब सर कटा हुआ शेर लगता है।...(<u>व्यवधान</u>) यह बात सही है कि उत्तर प्रदेश, बुंदेलखंड की मांग होती है। यह हकीकत है कि अभी हाईकोर्ट उत्तर प्रदेश ने उत्तर प्रदेश की सरकार को निर्देशित किया कि वहां पर पिछले तीन साल से करीब 250,300 मौतें हो चुकी हैं जिसका रिकार्ड नहीं है। अभी मेरे एक मित्र कह रहे थे, मैं सेन्ट्रल हॉल में था, अमर उजाला के थे, उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने यह कहा कि वहां पर बुंदेलखंड में आत्महत्या की स्थिति किसानों की अभी तक नहीं आई है। अगर आई है तो एक आई है। मैंने कहा कि उत्तर प्रदेश और केन्द्र सरकार के छत्तीस के भी आंकड़े हो सकते हैं। कभी कभी फायदे के लिए मिल जाते हैं लेकिन हो सकता है कि न हो। लेकिन अगर उनको सही रिपोर्ट लेना है तो उत्तर प्रदेश, हाईकोर्ट ने जो शासन को निर्देश दिया है, उसकी रिपोर्ट मंगा लें तो मेरे ख्याल से हकीकत मालूम हो जाएगी। पश्चिम वाले मांग करते हैं कि हमको हरित प्रदेश चाहिए, हमारे राष्ट्रीय लोक दल के मित्र कहते हैं। बुंदेलखंड के लोग कहते हैं कि हमें बुंदेलखंड राज्य चाहिए और पूर्वान्चल के लोग कहते हैं कि हमें पूर्वान्चल राज्य चाहिए। तो बांट दीजिए। आज प्रदेश के बांटने की जो बात है तो देश के बंटने में भी कोई समय नहीं लगेगा। हम तो बीच में ही बचेंगे। पूर्वान्चल में आएंगे तो पूर्वान्चल के रहेंगे।

इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि जो पैसा केन्द्र से राज्यों को जाता है, हमारे यहां तो ज्यादातर जो पैसा गया, चार साल में राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण, पीएमजीएसवाई का एक भी काम नहीं हुआ। बजट में वे अलग डाइवर्ट कर दिये गये। अगर अलग डाइवर्ट कर दिया गया तो केन्द्र ने पैसा देना भी बंद कर दिया। आज इससे पूरा प्रदेश सफर कर रहा है। इसलिए मैं मांग करना चाहूंगा कि कम से कम जो हमारे डा. भोला सिंह जी ने और तमाम मित्रों ने जो बिहार प्रदेश से ताल्लुक रखते हैं, जो उनकी पीड़ा है, उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं और चाहता हूं कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए, विशेष पैकेज दिया जाए ताकि बिहार की स्थिति और सुदृढ़ हो और वहां विकास हो।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदय, संकल्प के प्रस्तुतकर्ता भोला सिंह जी का आपने समर्थन किया है और अभी आप आसन पर हैं, शाहनवाज हुसैन जी, मंगनी लाल मंडल जी, शैलेन्द्र कुमार जी और अन्य माननीय सदस्य, जो समर्थन कर रहे हैं, मैं आप सबका धन्यवाद करता हूं।

असलियत को जानना जरूरी है। बिहार पीछे छूट गया जबकि हिन्दुस्तान का सदियों का गौरवशाली इतिहास का दो-तिहाई इतिहास बिहार का है। यदि इतिहास संपूर्ण सदियों के इतिहास से बिहार के इतिहास को घटा लिया जाए तो कुछ बचता नहीं है। सभी माननीय सदस्यों ने गौरवशाली इतिहास का सवाल उठाया है, मैं उसमें नहीं जाऊंगा। मैं संक्षेप में केवल बिहार को विशेष राज्य का दर्जा के विषय को उठाना चाहता हूँ। स्वर्गीय कर्पुरी ठाकुर और हम सब, समाजवादी खानदान के बाबू जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव उसी समय से बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए, सवाल उठाते रहे। लेकिन सवाल में तेजी तब आई जब बिहार का 15 नवंबर, 2000 को बंटवारा हुआ। हम वहीं से खड़े होकर खिलाफ में बोल थे तब सोनिया गांधी जी और स्वर्गीय माधवराज सिंधिया जी मौजूद थे और सबने समर्थन किया था। उस वक्त हमारा उस पर अमेंडमेंट था। उसके बाद तेजी आई, माननीय अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे और शाहनवाज हुसैन जी भी मंत्री थे, भोला सिंह जी की पार्टी और जेडीयू के लोग भी उसमें शामिल थे, एक दर्जन बिहार के मंत्री थे। अभी मंगनी लाल मंडल जी सवाल उठा रहे थे, सुशील सिंह जी पार्टी से निकाले गए, जेडीयू इसमें है ही नहीं। हम यही बता रहे हैं कि ये लोग कितने गंभीर हैं और उस समय कितने गंभीर थे। मैं यही भेद खोल रहा हूं। उस दिन भी हम अकेले थे जब इसी सदन में तीन बार सवाल उठा था, आठ घंटे बहस हुई। 16 मई, 2002 को तीसरी बार बहस हुई, वसुंधरा राजे सिंधिया जी ने वहां से सवाल जवाब किए कि

आप तीन बार सवाल उठा चुके हैं। तब भी यही सवाल था कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए, बिहार का कर्जा माफ किया जाए, विशेष पैकेज 1,79,000 रुपए का दिया जाए। मैं इन तीनों सवालों पर तीन बार सदन में उठा और उस समय हम लोग बिहार के सांसद थे, एक कमेटी बनाई थी, श्री नीतिश कुमार जी उसके अध्यक्ष थे। आपको याद होगा सब लोग थे। एक बार बैठक हुई दोबारा बैठक नहीं हुई। एक और कमेटी बनी थी कि ये लोग देखभाल करेंगे। तब अटल बिहारी वाजपेयी जी के पास सब पार्टी के सांसद गए थे। अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे, मैं उस समय की बात बता रहा हूं। सारे सांसद गए थे और तब यही सवाल था। गुजरात साहब ने पंजाब का 8000 करोड़ का कर्ज माफ किया था। तब बिहार पीछे छूट गया था, इसका कर्ज माफ किया जाना चाहिए था, तब इन लोगों ने मांग को क्यों छोड़ दिया? मेरी मांग है कि बिहार को विशेष पैकेज दिया जाए, विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए। तीन बार सवाल उठा था। आपके राज्य में एक दर्जन मंत्री थे, शाहनवाज हुसैन जी कहते हैं कि वर्तमान में मंत्री नहीं हैं, उस समय एक दर्जन मंत्री थे, अब सवाल उठता है कि तब क्यों विशेष राज्य का दर्जा क्यों नहीं मिला?

उस समय एक दर्जन मंत्री थे तो सवाल उठेगा कि विशेष राज्य का दर्जा क्यों नहीं दिया गया?

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : राज्य सरकार लेने को तैयार नहीं थी, हम देने को तैयार थे, लेकिन राज्य सरकार लेने को तैयार नहीं थी।....(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, दिघा पुल का जब शिलान्यास हो रहा था, तब तत्कालीन प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शिलान्यास करने के लिए गये थे। उस गांधी मैदान की भरी सभा में उस समय की मुख्य मंत्री, श्रीमती राबड़ी देवी ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग की थी, उन्होंने इसका सवाल उठाया था। ...(व्यवधान) मैं अभी सारे भेद खोलता हूं...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप डा.रघुवंश प्रसाद सिंह जी को बोलने दीजिए। कृपया व्यवधान पैदा न करें, आप बैठिये।

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦ **

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : मैं भेद खोलता हूं। राज्य सरकार के द्वारा सवाल उठाया गया था और सम्पूर्ण विधान सभा में सभी पार्टी के लोगों ने रिजोल्यूशन पास किया था...(व्यवधान)

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦ **

â€¦(व्यवधान)

सभापति महोदय : केवल डा.रघुवंश प्रसाद सिंह जी की बात ही रिकार्ड पर जायेगी।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : आपका पांच वर्ष राज रहा है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई, बल्कि हमारी मांग को ठुकरा दिया गया। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : प्राइवेट मैम्बर बिल में टोका-टाकी मत कीजिए, कृपया उन्हें बोलने दीजिए। धारा प्रवाह विचारों में व्यवधान न डालें।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : मैं वह हिसाब भी अभी बता रहा हूं। ...(व्यवधान) जब मैं पांच वर्ष मंत्री था, उसका भी हिसाब मैं बता रहा हूं और तुम्हारे एक दर्जन मंत्री थे, उसका भी हिसाब बता रहा हूं। अभी डा.भोला सिंह ने बहुत अच्छे तर्क दिये हैं और मजबूती से उन्होंने बहस की है और करनी भी चाहिए। लेकिन जब वोट डल रहे थे तो * ने ऐलान किया था, मैं आपको याद कराता हूं कि विशेष राज्य का दर्जा मिलने पर हम कांग्रेस का समर्थन करेंगे, मैं जानना चाहता हूं कि क्या आप उस बात पर कायम हैं?...(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया उन्हें बोलने दीजिए। किसी की बात रिकार्ड में नहीं जायेगी। केवल डा.रघुवंश प्रसाद सिंह जी का वक्तव्य ही रिकार्ड में जायेगा, बाकी किसी की बात रिकार्ड में नहीं जायेगी।

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦ **

â€¦(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया डा.रघुवंश प्रसाद जी को बोलने दीजिए, आप बैठिये और उन्हें बोलने दीजिए।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : क्या ये लोग चाहते हैं कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिले, मैं चाहता हूं और बताता हूं कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा क्यों मिलना चाहिए।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : लाल सिंह जी, आप बैठिये। कृपया सभी बैठ जाएं और इन्हें बोलने दीजिए।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : *

के बयान की सीडी होती है और मैं अनुसंधान करा रहा हूं। मैं शाहनवाज साहब को दिखा दूंगा ...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record. Only Dr. Raghuvansh Prasad Singh's speech will go on record.

*(Interruptions) â€¦ **

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : अच्छा, वह बयान उन्होंने दिया था...(व्यवधान) उससे केस कमजोर होता है और केस दो बातों से कमजोर होता है। इसे मैं मजबूत कर रहा हूं। लेकिन दो बातों में कमजोरी है। प्रथम यह है कि जब आप लोग एक दर्जन मंत्री थे तो उस समय यह क्यों नहीं हुआ और उसमें नोटिस भी नहीं...(व्यवधान) श्रीमती वसुंधरा राजे का जवाब हाथ में है, उसमें कोई जिक्र नहीं, कोई चर्चा तक नहीं।

दूसरी बात यह है कि भोला बाबू ने अपने भाषण में कहा और श्री शाहनवाज साहब ने भी कहा कि बिहार बहुत तरक्की कर रहा है, वहां के मुख्य मंत्री का नेतृत्व बहुत अच्छा है और यह जयकारी दल हो गये। इस पर सवाल नम्बर दो यह उठेगा कि यदि बिहार बहुत तरक्की कर रहा है तो आपको विशेष राज्य का दर्जा देने की क्या जरूरत है?...(व्यवधान) आप केस कमजोर मत कीजिए, बिहार के दस करोड़ लोगों की आबादी का सवाल है।

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

â€¦(व्यवधान)

सभापति महोदय : कोई बात रिकार्ड में नहीं जायेगी, केवल डा.रघुवंश प्रसाद सिंह का वक्तव्य रिकार्ड में जायेगा।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : जनता का पैसा खर्च करके मीडिया में जब हुआ और यह जयजयकारी दल हो गये...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप उन्हें बोलने दीजिए, यह प्राइवेट मैम्बर बिल है। आपने भी अपने समय में बोला है, अब उन्हें बोलने दीजिए।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : ये लोग जयजयकारी दल हैं...(व्यवधान) कहते हैं कि वहां के मुख्य मंत्री

के कारण बिहार में बड़ी तरक्की हो रही है। अब बिहार गुजरात के बराबर आ जायेगा। अभी भोला बाबू भाषण में कह रहे थे कि 11 परसैन्ट ग्रोथ हो गई और बिहार में बड़ी तरक्की हो रही है। इस पर सरकार कहेगी कि यदि आपकी इतनी तरक्की हो गई है तो क्या इतनी तरक्की वाले राज्य ने विशेष राज्य का दर्जा लिया है? फिर आपका क्या जवाब होगा। आप केस कमज़ोर मत कीजिए। ...(व्यवधान) श्री नितीश कुमार के जयकार में बिहार के केस को कमज़ोर मत करिए, मैं यही सावधान करता हूँ। बिहार की दस करोड़ की आबादी का जो सवाल है, उसका नुकसान, *â€¦** का जयकार कर के मत कीजिए। ...(व्यवधान) मैं आपको बताता हूँ कि बिहार की स्थिति क्या है?...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN (SHRI SATPAL MAHARAJ): Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦ *

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, अभी हाल में अखबार में छपा है कि प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि एनडीसी में विचार में होगा। दूसरा न्यूज़ छपा है कि जीओएम में चला गया। फिर किस बात की बहस है? आप उसको सुनिए। जयकार करने में और एकतरफा प्रचार करने में देश को कमज़ोर कीजिए। इसलिए केस क्या है, मैं यह बहस करना चाहता हूँ। यह सवाल बिहार की दस करोड़ आबादी का है। जब आजादी मिली थी, तब बिहार प्रतिव्यक्ति आय के हिसाब से तीसरे नम्बर पर था। लेकिन पंचवर्षीय योजना प्रथम से लेकर 8वीं और 9वीं तक देश भर में प्रतिव्यक्ति आय सबसे न्युनतम हो गई। यह ठीक है कि यहां पर ऊंचे-ऊंचे पदों पर बैठने वाले बाबू राजेन्द्र प्रसाद और बाबू जगजीवन राम सभी बिहार से थे लेकिन बिहार में रीज़नलिज्म नहीं है। महोदय, रीज़नलिज्म हमने सीखा नहीं है। हमारे कल्चर में बसता है कि हम देश हैं। महोदय, बिहार पीछे छूट गया है। बिहार की बहुत ही उपेक्षा हुई है और अभी भी हो रही है। बिहार को विशेष राज्य के लिए इनका क्राइटेरिया है कि आर्थिक मामले में बिहार सबसे पीछे है, प्रतिव्यक्ति आय का हिसाब बता रहे थे। नंबर दो - बार्डर एरिया हो। 709 किलोमीटर लंबा बिहार और नेपाल के साथ देश का बार्डर है। geographical disadvantageous position में हो। भौगोलिक कारणों से बिहार के 27 जिले बाढ़ ग्रस्त होते हैं। बाढ़ग्रस्त होने के चलते हर साल बर्बादी होती है और सात जिले सूखे के चपेट में आते हैं। इस तरह बिहार geographical disadvantageous position में है तो इस हिसाब से तीन पॉइन्ट पूरे हुए। चौथा है कि ट्राइबल इलाके ज्यादा हों और पांचवा है हिली एरिया। ट्राइबल में हमारे यहां लोग कम हैं लेकिन ट्राइबल की तरह लोग बहुत हैं। जैसे नुनिया जाति है, मल्लाह जाति है। ब्रिटेन के जो समाजशास्त्री हैं उन्होंने लिखा है कि वे लोग भी ट्राइबल की स्थिति में हैं। वे लोग भी मांग कर रहे हैं। झारखण्ड बनने के बाद बिहार में वर्तमान में एक फीसदी ट्राइबल है, लेकिन ट्राइबल की तरह लोगों को जोड़ा जाएगा तो उसमें कम से कम 15 फीसदी लोग ट्राइबल की तरह हैं। वे लोग मांग करते हैं कि उन्हें भी जोड़ा जाए। मल्लाह, नुनिया मांग करते हैं कि हमको ट्राइबल का दर्जा दिया जाए। अति पिछड़ी जाति के लोग, गड़ेरिया लोग जो भेड़ चलाते हैं ये लोग मांग करते हैं कि हम को अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति में रखिए। इस तरह के लोग वहां हैं। जो सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक सभी मामलों में बहुत पीछे छूट गये हैं। अब मैं हिल्ली एरिया का जिक्र करता हूं। हमारा भी कैमूर का इलाका, राजगीर का इलाका, जहानाबाद का इलाका और नेपाल से लगा हुआ इलाका, उसमें भी पहाड़ी है। इसलिए ये पांच सवाल हैं, जिससे अति पिछड़ा, विशेष राज्य का दर्जा पाने का हक बिहार का बनता है। महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि उपेक्षा क्या हुई? भारत-नेपाल समझौते के लिए सार्क कार्यालय खोलना था और वहां से हम हर साल बर्बाद होते हैं, कोशी, बागमती, कमला, बलान, भुतही सब नदियों से हर साल हम बर्बाद होते हैं। हम जानना चाहते हैं कि उसके लिए क्या हुआ है, कहां पर मामला अटक गया है? महोदय, यह ज्योग्रफिकल

डिसएडवान्टेजियस पॉजीशन इसीलिए है। इसी वजह से साधारण मुश्कटी हिसाब देख लिया जाये। देश में 33 लाख किलोमीटर सड़क है और 66 हजार किलोमीटर हाइवे है। उसी में हाइवे है, उसी में फोर लेन है, उसी में सिक्स लेन है, उसी में एक्सप्रेस है, सब उसी में है। बिहार का इसमें कितना हिस्सा होना चाहिए, हम देश की जनसंख्या का 12वां हिस्सा हैं, 10 करोड़ की जनसंख्या हमारी है। 12वां हिस्सा कितना होता है, साढ़े पांच हजार किलोमीटर, वहां हाइवे 3,400 किलोमीटर है, लेकिन होना चाहिए साढ़े पांच हजार किलोमीटर। मैं नेशनल हाइवे से शुरू करता हूं, नेशनल हाइवे में भी बिहार देश भर में सबसे पीछे है। आबादी के हिसाब से हमारे यहां जितना हाइवे होना चाहिए, वह नहीं है। श्री बालू के समय में फोर लेन बनाने के लिए, 890 किलोमीटर उन्होंने स्वीकृत किया था, उसे भी बीच में काट दिया गया। पटना से पूर्णिया तक फोर लेन, पटना से मुंगेर तक फोर लेन, पटना से बक्सर तक फोर लेन, पटना-गया-डोभी फोर लेन, पटना से मोहनियां फोर लेन, पटना से सोनबरसा फोर लेन, जोगबनी तक फोर लेन और उधर रक्सौल तक फोर लेन, सबके फोर लेन को काटकर थोड़े का छोड़ दिया गया और ज्यादातर को टू लेन कर दिया गया। हाइवे में कमी, फोर लेन में कटौती, उसी तरह से महोदय बिहार में 81 हजार किलोमीटर सड़कों की लम्बाई है। देश भर में 33 लाख किलोमीटर सड़कों की लम्बाई है, लेकिन बिहार में 81 हजार किलोमीटर सड़कों की लम्बाई है। उसमें से 3,400 किलोमीटर हाइवे, स्टेट हाइवे वे बना रहे हैं, वह भी 3-4 हजार किलोमीटर के करीब होगा। बाकी डिस्ट्रिक रोड है और उसके बाद रूरल रोड है। रूरल रोड में कह रहे थे कि रोक दिया गया, कैसे रोक दिया? चार बार *â€¦* ने हमको रोका कि आप मंजूर मत कीजिये। हमने कहा कि तुम्हारा बिहार है, हमारा भी बिहार है, हम मंजूर करेंगे।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, ये नाम ले रहे हैं।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, हमको रोक रहे थे।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Everything objectionable will be removed.

...(*Interruptions*)

सभापति महोदय : यह नाम डिलीट हो जायेगा।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : ये *â€¦* की जयकार बोल रहे थे।...(व्यवधान) हम आरोप नहीं लगा रहे हैं जो आप कूद-कूदकर खड़े हो रहे हैं।...(व्यवधान) मैं असलियत बयान कर रहा हूं। जब वे हमें मना करते थे, लेकिन हम नहीं माने। 8 हजार करोड़ सेंट्रल एजेंसी, 8 हजार करोड़ राज्य सरकार, 16 हजार करोड़, 36 हजार किलोमीटर पांच वर्षों में मंजूर किया। इसके बाद एक इंच भी मंजूर नहीं हुआ।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप उन्हें बोलने दीजिये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : इनके मुख्यमंत्री जी ने हमें रोकने के लिए कहा, हम नहीं मानें, अबकी सरकार ने रोक दिया और मुख्यमंत्री जी की बात मान ली। अब एक इंच भी मंजूर नहीं है तो अब आप चुप क्यों हैं? आप चुप क्यों हैं, क्या इससे बिहार का हित हो रहा है?...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप व्यवधान पैदा न करें, आप उन्हें बोलने दीजिये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : बिहार का अहित हो रहा है, आप चुप क्यों हैं?

सभापति महोदय : रघुवंश प्रसाद जी, अब आप समाप्त करें।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : सभापति महोदय, बिहार में केवल प्राइमरी और मिडिल स्कूल में तीन लाख शिक्षकों की कमी है। वेतन की विषमता भी हो गई है। हैडमास्टर 90 फीसदी स्कूलों में हैं ही नहीं। ...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन :...* के समय में था ही नहीं। 15 साल आरजेडी ने राज किया। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप नाम मत लीजिए। नाम डिलीट कर दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦ **

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, इन्होंने वेतन की विषमता इतनी कर दी कि एक मास्टर को 4000 रुपये तो एक मास्टर को 20000 रुपये, एक मास्टर को 6000 रुपये तो एक मास्टर को 30000 रुपये। इन्होंने बिहार में पढ़ाई को बर्बाद किया है। इसलिए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिलना चाहिए। इन्होंने बिहार को चौपट किया है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप समाप्त कीजिए। बैठ जाइए। पाटसाणी जी आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Now nothing will go on record. Only Dr. Prasanna Kumar Patasani will speak.

*(Interruptions) â€¦ **

सभापति महोदय : रघुवंश जी की बात रिकार्ड में नहीं जाएगी। पाटसाणी जी बोलेंगे।

*(Interruptions) â€¦ **

सभापति महोदय : आप बैठ जाइए। माननीय सदस्य को बोलने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

सभापति महोदय : यह सब रिकार्ड में नहीं जाएगा। आप बैठिये, पाटसाणी जी को बोलना है। कुछ भी रिकार्ड में नहीं जा रहा है। पाटसाणी जी आप बोलें।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : मैं कनक्लूड करना चाहता हूँ।

सभापति महोदय : कितना समय आपको दे दिया है। चलिए, एक मिनट में कनक्लूड कीजिए।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : इसलिए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिलने के लिए ये जो दावा करते हैं कि करोड़ आदमियों के हस्ताक्षर आए हैं और विशेष राज्य का दर्जा बिहार को मिलना चाहिए, तो हमारे तीन सवाल थे। जो पाँच वर्षों तक हमने लड़ाई लड़ी थी और इन लोगों ने सुनवाई नहीं की, अब वही बात को फिर से दोहरा रहे हैं। उसमें तीन सवाल थे - कर्ज़ा माफी वाला और पैकेज वाला, वह क्यों छोड़ दिया? क्यों छोड़ दिया? आप लोगों की मांग पर छोड़ दिया है। ...(व्यवधान) हम लोग जब राज्य में आए तो विशेष राज्य का दर्जा कुछ नहीं। इतना पैसे के लिए छलैया रलैया किया और फिर बैठ गए जहाँ के तहाँ। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : अब आप बैठ जाइए। यह सब कुछ रिकार्ड में नहीं जाएगा।

*(Interruptions) â€¦ **

MR. CHAIRMAN: I have to make an announcement.

â€¦(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦ **

सभापति महोदय : रघुवंश जी, बैठिये। आपकी बात हो गई है। आप सब बैठिये।

â€¦(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, the allotted time for discussion on this Resolution is over. I have a list of nine more Members who want to speak on this Resolution. If the House agrees, the time for discussion on this Resolution may be extended by one hour.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

DR. PRASANNA KUMAR PATASANI (BHUBANESWAR): Hon. Chairman, Sir, I must convey my heartfelt thanks to Dr. Bhola Singh that we are discussing on this Resolution today in the House. I am delighted to participate in this discussion.

Moreover, I can tell you one thing, that Shri Hussain, the former Minister, has very correctly mentioned two things here. One is that there is no Minister in the Cabinet from Bihar. The same thing has happened to my State also as there is no Cabinet Minister in the Centre from Odisha. Odisha and Bihar are just like two sides of a coin having high heritage from the days of Lord Jagannath, the lord of the universe. You must have witnessed the biggest / gigantic temple in the world of

Lord Jagannath above which there is a green wheel of 16 feet radius, and above that is the biggest flower of the globe renouncing *Patita Pavana Vana*, that is, 180 feet high. It can be seen nowhere in the globe. I can also tell you that there is Konark, Lingaraj and Lord Jagannath within 60 km radius, which can be seen nowhere in the world.

I would like to mention about Oxford. Oxford is the brightest example promoting the Britishers in knowledge. The same thing happened to Nalanda, and the same thing happened to our State of Odisha in Lalitgiri and Udayagiri. From those days, Jagannath was called Buddha, and from those days Ashoka was converted as Chandalika in my State Odisha. At the same time, you know that butchers were butchering and annihilating lakhs and lakhs of people from Odisha to Bihar, and they were suffering in the Bihar jails. So, this tradition is not from now. It is *Puranam alayam karunalayam namami bhagvatpadam sankaram lok sankaram*. So, it is from Shiv and Shankar; the place of creation; and from Bihar to Patliputra to Konark to Odisha. So, I can tell you that the Central Government is highly neglecting Bihar and Odisha not from now, but from the days of Independence. Hence, both the States are below poverty line.

Recently, I was in Sudan and Libya with one of my friends from Congress, namely, Shri Kishanbhai V. Patel. I have seen in Sudan with my own eyes that some Bihari bonded labourers are not released in Libya, and the same thing happened in Sudan. Both of us met the concerned Minister of External Affairs and also the Speaker regarding this issue, and their prayers were granted. Presently, you perceive a new horizon of science. We believe in it, but what happened to it.

Presently, we are dealing with your brilliant channels as also mobile and laptop, but in this modern age, a Bihari or Odiya bonded labour is starving here. In those times, it was called *jajan,* and today that is named as bonded labour. They are starving and still serving far away from their State of Bihar and Odisha. I have seen this happening in Sudan. They are crying, but as we were there, hence, we could get them released. I am grateful to my Chief Minister Shri Naveen Patnaik who helped in getting those bonded labourers released from Libya.

Presently, we are quarrelling here during the debates, but we are not realizing religion-wise, which I believe like you, Sir, realize within. We are not realizing democracy, and we are not realizing the pathetic condition of those poor people. This is not the cracy of the people, but it is the cracy of the demon. It is highly debated here from scam to now, but you see the condition of Odisha and Bihar. It is very much pitiable. I am grateful to the Central Government for giving this special status to eleven States, but why were these two States – Orissa and Bihar – debarred from getting that status? Since Bihar and Orissa have the same problems, same heritage and same traditions, I demand special status for these two States.

I have great honour for you. This issue must be discussed, and special category status must be announced in respect of Bihar and Orissa. I honour the Resolution tabled by you. I, again, salute you. I say that it should be thoroughly discussed in the form of a Bill. It must be brought before the House and then it should be sent to the parliamentary committee for its scrutiny and then it should be given final approval. Thank you.

सभापति महोदय : सुशील कुमार जी, आप पांच मिनट बोलिए तो सब को बोलने का मौका मिल जाएगा। आप संक्षिप्त में अपने विचार रखिए।

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद): सभापति महोदय, आदरणीय भोला बाबू ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने के लिए जो प्रस्ताव सदन में रखा है, मैं उसके पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मेरा सबसे पहला प्रश्न यह है कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिले तो क्यों, मैं इसके पक्ष में अपना तर्क एवं अपनी बात रखना चाहता हूं। मैं यह कहना चाहता हूं कि भारतीय संविधान की जो मूल अवधारणा है, वह बराबरी और समानता की है। इसलिए यह जो संघीय सरकार से मांग है कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए, यह मांग कोई राजनीतिक, किसी दल विशेष की मांग नहीं है, यह मांग समानता के आधार पर भारतीय संविधान की मूल अवधारणा के आधार पर है। यह मेरा और बिहारियों का हक है, यह हर बिहारी का दावा है, हम भारतीय संविधान के परिप्रेक्ष्य में संघीय, भारत की सरकार से यह मांग रखते हैं कि वे हमें विशेष राज्य का दर्जा दे।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि पहली पंचवर्षीय योजना से जब देश आजाद हुआ, पंचवर्षीय योयनाएं शुरु हुई तो पहली पंचवर्षीय योजना से भारत सरकार यह हिसाब लगा ले, चूंकि भारत सरकार के पास सारे आंकड़े हैं, अपने आंकड़ों को देख ले और बिहार के प्रतिनिधियों को आमने-सामने बैठा कर ये हिसाब लगा लें, ये बता दें कि पहली पंचवर्षीय योजना से देश के बाकी हिस्सों में प्रति व्यक्ति कितना निवेश हुआ, विभिन्न योजनाओं के तहत कितनी राशि अन्य प्रदेशों को गई और कितनी राशि बिहार के लिए गई।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि बिहार के साथ आजादी के 64 वर्षों तक जो नाइंसाफी और हकमारी होती रही, उसका आपको संक्षेप में विवरण देना चाहता हूं। मेरे पूर्व के वक्ताओं ने, माननीय सदस्यों ने सारे तर्कों को रख दिया है, मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाहता। लेकिन मैं अलग से यह बात कहना चाहता हूं कि बिहार की जनसंख्या लगभग दस करोड़ है और हमारा देश के खजाने में जो हिस्सा होना चाहिए, यदि मिला हो, भारत सरकार अपने आंकड़ों एवं तर्कों से बिहार के प्रतिनिधियों, वहां के बिहारियों को यदि बता दे कि आपके साथ कोई नाइंसाफी एवं हकमारी नहीं हुई तो हम इस मांग को छोड़ देने के लिए तैयार हैं, क्योंकि हम समानता एवं बराबरी के लिए इस लड़ाई को लड़ रहे हैं। इसलिए यह मांग हम लोगों ने रखी है। चाहे स्वास्थ्य की सुविधा का सवाल हो, बिहार में अस्पतालों के निर्माण की बात हो, देश के अन्य हिस्सों एवं प्रदेशों में जो स्वास्थ्य सुविधाएं हैं, उसके हिसाब से बिहार में नहीं हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हमारी आबादी का जो घनत्व है, 1200 प्रति स्कवेयर किलोमीटर में बिहार की आबादी का घनत्व है। उसके हिसाब से हमारे यहां न स्कूल हैं, न विश्वविद्यालय हैं और न ही शिक्षक हैं।

सड़क के मामले में, राष्ट्रीय राजमार्गों के विषय में अभी रघुवंश बाबू ने बताया है। यही हाल ग्रामीण सड़कों का है। बिजली की जो स्थिति है, अन्य सदस्यों ने उसकी चर्चा की है, मैं उसको दोहराना नहीं चाहता। सबसे महत्वपूर्ण जो तथ्य है, वह कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में है, यानि किसी भी क्षेत्र में आंकड़े देख लिए जायें, किसी भी क्षेत्र में बिहार को अभी तक उसका वाजिब हक नहीं मिला है।

बिहार की जो परिस्थिति है, उसमें बिहार दो हिस्सों में बंटा हुआ है। गंगा नदी के उत्तर के हिस्से को उत्तरी बिहार के नाम से जाना जाता है और गंगा नदी का जो दक्षिणी भाग है, उसे दक्षिणी बिहार के नाम से जाना जाता है।

सभापति महोदय : जरा संक्षिप्त करें, अन्य मैम्बर्स भी बोलेंगे।

श्री सुशील कुमार सिंह : मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि बाढ़ की चर्चा यहां हुई। बिहार का जो दक्षिणी हिस्सा है, वह विगत दो सालों से सुखाड़ की चपेट में था। इस वर्ष अभी 4-5 दिन से थोड़ी अच्छी वर्षा हुई है तो किसानों को थोड़ी उम्मीद जगी है, लेकिन एक तरफ बाढ़ और दूसरी तरफ सुखाड़ होने से हमारा यह हक बनता है कि भारत सरकार इस राज्य को विशेष राज्य का दर्जा दे।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि यहां होता क्या है कि हम मांगते कुछ हैं और हमें पकड़ा कुछ और दिया जाता है। बिजली के उत्पादन के क्षेत्र में बिजलीघरों की स्थापना के लिए हम लोगों ने कोल लिंकेज मांगा तो भारत सरकार ने हमें कोल ब्लॉक पकड़ा दिया। हमें भूख लगी है, हमें खाने को अभी चाहिए तो भारत सरकार हमें बना हुआ खाना नहीं देकर चावल दे देती है, दाल दे देती है, आलू दे देती है, फिर हम उसको बनाएंगे। हम कोल ब्लॉक को डैवलप करेंगे, तब हम अपनी भूख मिटाएंगे। हम मांगते कुछ हैं, हमें पकड़ा कुछ दिया जाता है।

सभापति महोदय : अब संक्षिप्त करें।

श्री सुशील कुमार सिंह : महोदय, मैं बस खत्म कर रहा हूं।

मैं बिहार का जो स्वर्णिम अतीत है, उसकी चर्चा विस्तार से तो नहीं करना चाहता, लेकिन संक्षेप में उसे जरूर कहना चाहूंगा। मैं एक उदाहरण नाइंसाफी का और देना चाहूंगा। देश के अन्य हिस्सों में पर्यावरण के नियमों को शिथिल करते हुए कल-कारखानों के लिए वन और पर्यावरण मंत्रालय की तरफ से जंगलों को काटने के लिए स्वीकृति दी जा रही है और बिहार के लोग जब सिंचाई परियोजनाओं के लिए अनापत्ति प्रमाण-पत्र मांगते हैं तो भारत सरकार उस पर रोक लगाती है। मेरे इलाके में ऐसी सिंचाई परियोजना है, जिससे 1.24 लाख हैक्टेयर जमीन की सिंचाई होगी और प्रतिवर्ष दो हजार करोड़ रुपये का अनाज उससे उत्पादित होगा, लेकिन भारत सरकार के वन और पर्यावरण मंत्रालय ने 2007 में उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया है कि आप उस कुटकू डैम में लोहे का फाटक नहीं लगा सकते। जब तक हम लोहे का फाटक नहीं लगाएंगे, उसमें जल का भंडारण नहीं होगा और हमारी नहरों में पानी नहीं आ सकता तो इस तरह से हमारे साथ नाइंसाफी हर क्षेत्र में हो रही है।

आजादी के समय बिहार के लोगों की जो भागीदारी थी, वह किसी दूसरे से कम नहीं थी। 1857 की लड़ाई में बाबू वीर कुंवर सिंह जी जैसे योद्धाओं ने वह उदाहरण प्रस्तुत किया, जो देश के इतिहास में दूसरा नहीं मिलता। इसलिए मैं समानता के आधार पर, भारत के संविधान की मूल अवधारणा के आधार पर भोला बाबू की मांग का समर्थन करते हुए यह मांग करता हूं कि भारत सरकार बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दे, ताकि हम देश के दूसरे राज्यों के बराबर खड़े हो सकें।

बस मैं यही कहकर अपनी बात को खत्म करता हूं।

श्री पन्ना लाल पुनिया (बाराबंकी): सभापति महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण संकल्प पर बोलने का अवसर प्रदान किया।

बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने के लिए, उसके पिछड़ेपन को दूर करने के लिए और विकास के रास्ते पर तेजी से बढ़ने के लिए डॉ. भोला सिंह जी ने जो संकल्प रखा है, मैं उसका पूरी तरह से समर्थन करता हूं। बिहार का गौरवशाली इतिहास रहा है। हमारे सभी पूर्व वक्ताओं ने इसके बारे में उल्लेख किया। बिहार एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है। अक्सर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि हिंदुस्तान में जो ग्रोथ रेट है, उसको पीछे धकेलने में बिहार, उत्तर प्रदेश और कुछ जो पिछड़े प्रदेश हैं, उनकी वजह से ग्रोथ रेट ज्यादा नहीं रही है। इसलिए कुछ लोग साउथ-नार्थ डिवाइड की बात करते हैं। साउथ में बहुत तरक्की हो रही है, वहां शिक्षा के क्षेत्र में और अन्य विकास के क्षेत्र में बहुत अच्छी तरक्की है, लेकिन उसके मुकाबले जो उत्तर के राज्य हैं, उनमें उतनी तरक्की न होने की वजह से हिंदुस्तान विकास के रास्ते में बहुत धीमी गति से चलता हुआ दिखायी देता है। उत्तर के राज्यों में इनको बीमारू स्टेट्स की संज्ञा दी गयी। इसमें बिहार सम्मिलित है, मध्य प्रदेश है, राजस्थान है, उत्तर प्रदेश है, इन राज्यों को कहा गया कि यहां धीमी गति से विकास हो रहा है और इसको आगे बढ़ाना बहुत आवश्यक है। अगर पूरे हिंदुस्तान का मुख्य भाग आगे विकास नहीं करता है, प्रगति के रास्ते पर नहीं बढ़ता है, तो हिंदुस्तान आगे नहीं बढ़ सकता है। अगर राष्ट्र एक गौरवशाली इतिहास बनाना चाहता है, पूरी दुनिया में नाम कमाना चाहता है, तो इन सब राज्यों को भी बाकी राज्यों के साथ विकास में आगे बढ़ना पड़ेगा। यह बताया गया कि इसकी दस करोड़ की आबादी है, वर्ष 2001 की जनगणना के हिसाब से यह आठ करोड़ तीस लाख है। इसमें अनुसूचित जाति की जनसंख्या 15.7 फीसदी है। जैसा बताया गया कि यह पिछड़ा हुआ है, गरीबी के जो आंकड़े हैं, उनकी संख्या 1 करोड़ 60 लाख 40 हजार 990 है। यह टेंटेटिव फीगर है, जो कि एराइव किया गया। यह फेमिलीज की संख्या है। अगर एक परिवार में पांच सदस्य औसतन मान लिए जाएं तो आठ करोड़ की जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे हैं। दस करोड़ की आबादी में अगर आठ करोड़ गरीब हैं, तो

आप अंदाज लगा सकते हैं कि यह प्रदेश बहुत पिछड़ा है और इसको विशेष सहायता और विशेष दर्जा देने की आवश्यकता है और इसको विकास के रास्ते में आगे बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है। आदरणीय रघुवंश बाबू ने जैसा कि बताया कि हमारी सड़कों को बारहवां हिस्सा पूरे हिंदुस्तान भर का आबादी के हिसाब से होना चाहिए। बिहार का जो एरिया है, अगर पूरे हिंदुस्तान भर का क्षेत्रफल देखा जाए, तो यह तीन फीसदी है, लेकिन जनसंख्या के हिसाब से आठ फीसदी से ज्यादा है। इस तरह यह बारहवां हिस्सा है, लेकिन बारहवें हिस्से के बराबर जो हमारी रूरल रोड्स हैं, वह मात्र 81 हजार 655 किलोमीटर हैं, नेशनल हाईवेज 3629 किलोमीटर हैं, स्टेट हाईवेज 3232 किलोमीटर हैं, मेजर डिस्ट्रिक्ट रोड केवल 7114 किलोमीटर हैं। यह विकास का अगर आइना है, तो मैं समझता हूं कि हम सब हिंदुस्तानियों को शर्म आनी चाहिए। पीने के पानी की व्यवस्था सब जगह नहीं है। एक आंकड़े के हिसाब से 3863 अनुसूचित जाति की आबादी है, जिसे 9 गैलन पानी भी एक दिन में नहीं मिलता है। इस ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। 533 पीएचसी हैं, 8858 सब-सेंटर्स हैं और प्राइमरी और सेकेंड्री स्कूल्स की एवलेबिलिटी दस हजार की आबादी पर केवल पांच हैं। अगर यह मान लिया जाए कि एक परिवार में पांच व्यक्ति होते हैं, तो दो हजार परिवार हुए। हर परिवार में दो बच्चे अगर प्राइमरी स्कूल में जाते हैं, तो चार हजार बच्चों के लिए, दो सौ के एवरेज को अगर देख लिया जाए, तो बीस स्कूल अवश्य चाहिए। लेकिन उसके मुकाबले पांच स्कूल भी नहीं हैं। यह हमको देखना चाहिए। बहुत सही बातें बताई गई कि वहां बिजली की सुविधा नहीं है। वहां की सड़के खराब हैं। हमारी जो प्राकृतिक संपदा है वह झारखंड में चली गई। बिहार एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र रह गया है। उसमें कोई साधन नहीं है, कोई डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट नहीं है। वहां सेन्ट्रल या स्टेट पब्लिक सेक्टर का इन्वेस्टमेंट नहीं है। इन की वजह से वहां की आय ग्यारह हजार रूपया प्रति व्यक्ति बताई गई है। चंडीगढ़ की प्रति व्यक्ति आय 80 हजार रूपया है। औसत अगर लगाया जाता है तो 44 हजार रूपया है। उसके मुकाबले हमारे बिहार की प्रति व्यक्ति आय सिर्फ ग्यारह हजार रूपया है। सभी पहलुओं पर आपने प्रकाश डाला है। मैं शिक्षा के बारे में विशेष रूप से कहना चाहूंगा कि बगैर शिक्षा के कोई विकास संभव नहीं है। यहां अगर पूरे हिन्दुस्तान का एवरेज वर्ष 2001 के हिसाब से देखा जाए तो साक्षरता रेट 65.4 फीसदी है लेकिन बिहार की साक्षरता रेट सिर्फ 47 फीसदी है।

सभापति महोदय : कृपया अब समाप्त करें।

श्री पन्ना लाल पुनिया : पूरे हिन्दुस्तान में महिलाओं की साक्षरता दर 54.2 फीसदी है लेकिन बिहार में 38.1 फीसदी है। इसमें कितना फर्क है।

सभापति महोदय : आपने बहुत अच्छे आंकड़े दिए हैं कृपया संक्षिप्त करिए।

श्री पन्ना लाल पुनिया : पुरुषों की साक्षरता दर 76 फीसदी है। दूसरा मैं बताना चाहूंगा कि बिहार में 20 फीसदी भी साक्षरता दर नहीं है, ऐसे छः जिले हैं। उन छः जिलों में शिवहर में शैडयूल्ड कास्ट्स की साक्षरता दर सबसे कम है जो 16.9 फीसदी है। विशेषरूप से मैं कहना चाहूंगा कि वहां पर कोई रेजिडेन्शल स्कूल नहीं है। वहां पर कोई विशेष योजना भी नहीं है। मैं यह भी बताना चाहूंगा कि बिहार में आठ जनपद ऐसे हैं जिसमें शैडयूल्ड कास्ट्स महिला साक्षरता दर 10 फीसदी से भी कम है जिसमें सबसे कम सुपौल 7.5 फीसदी है और यहां कोई रेजिडेन्शल स्कूल नहीं है और न ही यहां कोई अलग से व्यवस्था है। मैं एक बात और बताना चाहूंगा कि हम आर्थिक क्षेत्रीय असंतुलन खत्म करने की बात करते हैं तो समाज के विभिन्न वर्गों में जो असंतुलन है उसकी तरफ भी ध्यान देना चाहिए। अनुसूचित जाति की साक्षरता दर की अगर मैं आंकड़े आप को बताऊं तो पूरे बिहार के अनुसूचित जाति के महिलाओं की साक्षरता दर 15.5 फीसदी है, ओवर ऑल 28.5 फीसदी है।

सभापति महोदय : बस हो गया। अर्जुन राय जी खड़े हैं।

श्री पन्ना लाल पुनिया : पूरे हिन्दुस्तार भर के आंकड़े देखिए और अनुसूचित जाति के आंकड़े देख लिजिए। अनुसूचित जाति के विकास के लिए शेडयुल कॉस्ट का प्लान है उसमें 15.7 फीसदी खर्चा होनी चाहिए लेकिन खर्चा सिर्फ 7 फीसदी होता है। फिर भी ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं है जिससे आर्थिक दृष्टि से उसको आगे बढ़ने का मौका मिले। मैं आपका बहुत अभारी हूं कि आप ने मुझे बोलने का समय दिया। डाक्टर भोला सिंह जी ने बिहार को विशेष दर्जा देने के लिए जो संकल्प रखा है उसका मैं समर्थन करता हूं।

श्री अर्जुन राय (सीतामढ़ी): सभापति जी, डॉ. भोला सिंह जी के द्वारा लाए गए गैरसरकारी संकल्प के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। समय ज्यादा हो चुका है। मैं कुछ ही विषयों पर प्रकाश डालना चाहूंगा।

सभापति महोदय : समय कम है इसलिए थोड़ा संक्षिप्त कर देंगे तो अच्छा रहेगा।

श्री अर्जुन राय : सभापति जी, बिहार के संबंध में ज्यादा कुछ कहना नहीं है। जब नालंदा विश्वविद्यालय था तो दुनिया के लोग अध्ययन एवं अध्यापन के लिए आते थे। दस हजार स्टुडेन्ट्स के रहने की वहां व्यवस्था थी। आज का जो बिहार है, दुनिया का सबसे उपजाऊ भू-भाग जो गंगा का बेसिन है, जो गंगा और उसकी सहायक नदियों का मैदान है वह दुनिया का सबसे उपजाऊ मैदान है। इससे ज्यादा उपजाऊ मैदान दुनिया में कहीं नहीं है। इस देश के सभी लोग मेहनती हैं लेकिन बिहार के जो लोग हैं वे शारीरिक और मानसिक रूप से सबसे ज्यादा मेहनत करने वाले हैं। बिहार का इतिहास गौरवशाली है। लोकतंत्र का जन्म लिच्छवी में हुआ, बिहार के वैशाली जहां से रघुवंश बाबू एमपी हैं, हम उसी मुज़फ्फरपुर के रहने वाले हैं। गौतम बुद्ध ने दुनिया को मध्य मार्ग का संदेश बिहार से दिया। वह गुरु गोबिंद सिंह की धरती है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह की धरती है। हमारा इतना गौरवशाली इतिहास रहा है। लेकिन आज बिहार कहां जाकर खड़ा है।

सभापति जी, मैंने वर्ष 1993-94 से लेकर 2004-05 तक का एक आंकड़ा देखा। जीएसडीपी इन दस वर्षों में बिहार में सबसे कम था। कभी पंजाब आगे, कभी महाराष्ट्र आगे और कभी सारे राज्य आगे। यह अच्छी बात है, विकसित राज्य हैं, अच्छा करें, लेकिन हमारा जीएसडीपी सबसे अंतिम पायदान पर है। आखिर हमारे पास इतने संसाधन हैं। जब झारखंड और बिहार साथ था, देश के सबसे ज्यादा मिनरल्स आयरन ओर, कोल, अभ्रक, बॉक्साइड आदि बिहार में सबसे ज्यादा थे। जो भी उद्योग धंधे लगे, वे झारखंड में चले गए और अभी के बिहार में पानी, बालू और ह्यूमन रिसोर्सेज़ हैं। बिहार में आज ये तीन रिसोर्सेज़ हैं जिनके बल पर बिहार आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है।

मैं एक मिनट में आदरणीय रघुवंश बाबू के कुछ प्रश्नों का जवाब भी इसी माध्यम से देना चाहते हैं। रघुवंश बाबू ने कहा कि आदरणीय राबड़ी देवी जब बिहार की चीफ मिनिस्टर थी तो उन्होंने स्पैशल स्टेटस की मांग की थी। उस समय अटल जी प्रधान मंत्री थे। हम निवेदनपूर्वक कहना चाहते हैं कि आप बड़े नेता हैं, बड़ी नॉलेज भी है, लेकिन जब नीतीश जी बिहार में नवम्बर, 2005 में सत्ता में आए, उनके साथ राज्य में मैं भी मंत्री था। इनका साल का 4 हजार करोड़ रुपये का प्लान हैड था। जब नीतीश जी सत्ता में आए, उसके बाद 8 हजार करोड़ रुपये, 10 हजार करोड़ रुपये, 16 हजार करोड़ रुपये, 20 हजार करोड़ रुपये और 24 हजार करोड़ रुपये हो

गये। हमने अपना प्लान साइज़ बढ़ाया। माननीय मुख्य मंत्री नीतीश कुमार जी ने काम करने का प्रयास किया। लॉ एंड आर्डर ठीक हुआ। बिहार बढ़ रहा है, यह हम नहीं कहते, हमारी सरकार नहीं कहती, दुनिया में प्रसिद्ध श्री अमर्त्य सेन भी बिहार में जाकर कहते हैं कि बिहार बढ़ रहा है और तरक्की कर रहा है। श्री एपीजे अब्दुल कलाम कहते हैं कि बिहार तरक्की कर रहा है।

सभापति महोदय, समय का अभाव है। हम बताना चाहते हैं कि आखिर बिहार की तरक्की कैसे होगी। बिहार में 24 से 26 नदियां नेपाल से आती हैं, मैक्सिमम नदियां बारह मासी हैं। एक लोक सभा क्षेत्र में, जहां से हम सांसद हैं, उस इलाके में 24 नदियां बहती हैं। बाढ़, मानसून के समय फ्लड ज़ोन हो जाता है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अपनी बात थोड़ी संक्षिप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री अर्जुन राय : हमारे 20 एमपी हैं और हम पहले एमपी बोलने के लिए खड़े हुए हैं।...(व्यवधान) हम अपनी कुछ बात रखना चाहते हैं।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : प्राइवेट मैम्बर्स बिजनेस का समय छ: बजे खत्म हो जाएगा। इसलिए समय कम है।

â€¦(व्यवधान)

श्री अर्जुन राय : में संक्षेप में बोल रहा हूं। भारत सरकार ने नेपाल सरकार से कोई पहल नहीं की, चाहे हाइड्रो पावर के क्षेत्र में हो या नदी के पानी का खेतो में प्रॉपर यूटीलाइजेशन हो। भारत सरकार ने अभी तक कोई प्रयास नहीं किया। वर्ष 2007-08 में बिहार में भीषण बाढ़ आई। वर्ष 2007 में 23 जिले वॉश आउट हो गए, लेकिन भारत सरकार ने कोई मदद नहीं की। वर्ष 2008 में माननीय प्रधान मंत्री जी जब कोसी की त्रासदी में गए तो उन्होंने उसे राष्ट्रीय आपदा घोषित की। जब बिहार सरकार ने कोसी के नवनिर्माण के लिए 14 हजार करोड़ रुपये की डिमांड की, प्रधान मंत्री जी ने अनसुनी कर दी, भारत सरकार ने अनसुनी की और कोई पैसा नहीं मिला। मात्र एक हजार करोड़ रुपये मिले, उसे भी वापिस करने का पत्र चला गया था। हमें विशेष राज्य का दर्जा चाहिए। इसके लिए हमारे पास क्या आधार है, मैं आपको बताना चाहता हूं।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप थोड़ा संक्षिप्त कीजिए। समय का ध्यान रखिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री अर्जुन राय : मैं संक्षेप में बता रहा हूं।

सभापति जी, रिपोर्ट के मुताबिक विभिन्न राज्यों में राज्य घरेलू उत्पाद की विकास दरें - दसवीं योजना में हमारी विकास दर 4.7 प्रतिशत थी। जो स्पैशल कैटेगरी के राज्य हैं - अरुणाचल प्रदेश में 5.8 प्रतिशत, असम में 6.1 प्रतिशत, हिमाचल प्रदेश में 7.3 प्रतिशत, जम्मू कश्मीर में 5.2 प्रतिशत, मणिपुर में 11.6 प्रतिशत है।

18.00 hrs.

इस तरह से जितने भी ग्यारह स्पेशल स्टेटस के स्टेट्स हैं, उनकी विकास दरें हमसे बहुत अधिक हैं। हमारा विकास दर सबसे कम है। हमारे यहां सामरिक दृष्टिकोण की जगह है और इंटरनैशनल बॉर्डर लाइन टच करती है। माओवादी एक्टिविटी नेपाल से यहां माइग्रेट करती है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अपनी बात संक्षिप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

सभापति महोदय : अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री अर्जुन राय : हमारा फाइनेंशियल स्टेटस भी कमजोर है। चूंकि समय की कमी है और हमें विस्तार से बताना है कि आखिर बिहार के साथ इस तरह से भेदभाव होता रहा, जहां 1 करोड़, 40 हजार परिवार पावर्टी लाइन के नीचे हैं ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अपनी बात समाप्त कीजिए, क्योंकि समय हो गया है।

â€¦(व्यवधान)

श्री अर्जुन राय : हम भारत सरकार से आग्रह करना चाहते हैं कि बिहार सरकार ने, हमारी पार्टी ने सवा करोड़ लोगों का हस्ताक्षर दिया है कि बिहार को स्पेशल स्टेटस की मान्यता दीजिए और भोला बाबू जो गैर सरकारी संकल्प लाये हैं, उसे स्वीकार किया जाये। हम आपके माध्यम से सदन से आग्रह करना चाहते हैं कि बिहार को स्पेशल स्टेटस दिया जाये।

सभापति महोदय : श्री पुतुल कुमारी जी, आप अपनी बात एक मिनट में खत्म कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती पुतुल कुमारी (बांका): सभापति महोदय, मैंने अभी अपनी बात शुरू भी नहीं की है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बाद में फिर बोलेंगी।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती पुतुल कुमारी : सभापति महोदय, बिहार पर चल रही विशेष चर्चा पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं। मुझे इस चर्चा में बोलते हुए थोड़ी प्रसन्नता भी हो रही है और थोड़ा दुख भी। मुझे प्रसन्नता इसलिए हो रही है, क्योंकि यह बहुत अहम विषय है और मुझे इस पर बोलने का मौका मिला। मुझे दुख इसलिए है कि हम जहां आजादी के बाद...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप आगे भी बोलेंगी। जब नेक्स्ट सैशन आयेगा, यानी जब यह संकल्प लगेगा, तब आप बोलेंगी। आपकी बात कन्टीन्यू रहेगी। जब आगे इस संकल्प पर चर्चा होगी, तो आप ही बोलेंगी।

श्रीमती पुतुल कुमारी : ठीक है।

MR. CHAIRMAN: The House stands adjourned to meet again at 11 a. m. on 16th August, 2011.

18.02 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Tuesday, August 16, 2011/Sravana 25, 1933 (Saka).

---

* The sign + marked above the name of a Member indicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member.

* Not recorded

â€¦. This part of the speech was laid on the Table

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* English translation of the speech originally delivered in Bengali

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded